प्रहरी

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वर्ष : 31 अंक : 65वाँ संयुक्तांक (अक्टूबर 2020–सितंबर 2021)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना का कार्यालय

प्रहरी
परिवार

श्री रामावतार शर्मा
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

श्री अभिषेक सिंह
वरीय उप महालेखाकार

श्री आदर्श अग्रवाल
उप महालेखाकार

श्री शिव शंकर
उप महालेखाकार

सुश्री पुष्पलता
उप महालेखाकार

श्री राकेश कुमार
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री विकास कुमार नं. 1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री मनोज कुमार नं.1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री दिवाकर राय
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री सुजीत कुमार
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री राजू कुमार सिंह
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री अरूण कुमार
वरिष्ठ अनुवादक

मो. दानिश
कनिष्ठ अनुवादक

श्री वीरेन्द्र साहू
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अभिषेक कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

कार्यालयीन त्रैमासिक हिंदी पत्रिका

पैंसठवाँ अंक

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना का कार्यालय

महालेखाकार भवन

बीरचंद पटेल मार्ग, पटना - 800001

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

प्रकाशन : **प्रहरी**

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार अपने हैं। उनसे प्रहरी परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है। - संपादक मंडल

प्रकाशक : राजभाषा कार्यान्वयन समिति, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना का कार्यालय

आवरण पृष्ठ : कारगिल चौक, पटना।

साज–सज्जा : ओझा प्रोडक्शन केशरी नगर पटना।

मूल्य : राजभाषा हिंदी की निरंतर सेवा

मुद्रक : ओझा प्रोडक्शन केशरी नगर पटना।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका, पैंसठवाँ अंक

प्रहरी परिवार

संरक्षक

श्री रामावतार शर्मा
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

परामर्शी

श्री अभिषेक सिंह	वरीय उप महालेखाकार
श्री आदर्श अग्रवाल	उप महालेखाकार
श्री शिव शंकर	उप महालेखाकार
सुश्री पुष्पलता	उप महालेखाकार
श्री राकेश कुमार	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री विकास कुमार नं.1	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री दिवाकर राय	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री सुजीत कुमार	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री मनोज कुमार नं.1	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी **(संपादक)**
श्री राजू कुमार सिंह	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री अरूण कुमार	वरिष्ठ अनुवादक
मो0 दानिश	कनिष्ठ अनुवादक
श्री वीरेन्द्र साहू	कनिष्ठ अनुवादक
श्री अभिषेक कुमार	कनिष्ठ अनुवादक

इस अंक में

क्रम	रचना	विद्धा	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	प्रदूषण से **प्राकृतिक** संपदा और मनुष्य का अस्तित्व भी खतरे में	लेख	सिद्धेश्वर प्रसाद	4
2.	हमारा आहार, विचार एवं व्यवहार	लेख	के०एम० जयपुरियार	6
3.	कविताओं में जीवन	कविता	जयप्रकाश मल्ल	9
4.	परमगति	कविता	विकास कुमार नं.1	11
5.	मोतिहारी से नाता है महान ब्रिटिश उपन्यासकार जॉर्ज ऑरवेल का	लेख	मनोज कुमार नं.1	12
6.	सूरज फिर निकलेगा	कविता	श्यामदत्त मिश्रा	14
7.	बाजार	कविता	रूपेश कुमार सिंह	15
8.	पश्चाताप	कहानी	अजय कुमार झा	17
9.	कोरोना	कविता	बीरेन्द्र कुमार	24
10.	दो कविताएँ	कविता	गोपाल कुमार	25
11.	शेयर बाजार का आरंभ : वर्तमान संदर्भ के साथ	लेख	सतीश चन्द्र	26
12.	ऑनलाइन ऑडिट	कविता	अमृता सिंह	28
13.	अकेलेपन और एकांत में है अंतर	लेख	बीरेन्द्र कुमार	29
14.	बारिश की बूँदें	कविता	विजय कुमार ठाकुर	31
15.	ऑडिट कार्य	कविता	पी० सी० सिन्हा	32
16.	टोक्यो ओलंपिक में भारत का शानदार प्रदर्शन	लेख	योगेश कुमार	33
17.	जल, थल और स्वास्थ्य के लिए घातक प्लास्टिक	लेख	भुवन भास्कर	35
18.	'माँ की याद'	कविता	रवि प्रकाश	37
19.	कुछ समझने का काल है यह	कविता	दिलीप कुमार अरोड़ा	38
20.	साहब यही हकीकत है यह देख के दुनिया हँसती है	कविता	पवन कुमार,	39

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का

:-संदेश-:

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की गौरवशाली हिन्दी पत्रिका "प्रहरी" के 65वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिन्दी पत्रिकाओं का असीम योगदान रहा है। कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को निरन्तर बढ़ाना हम सब का संवैधानिक दायित्व है। "प्रहरी" इस लक्ष्य की प्राप्ति में एक सशक्त माध्यम है। राजभाषा क्रियान्वयन के अभियान और कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा के उन्नयन में "प्रहरी" की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

प्रसन्नता की बात है कि इस वर्ष भी 1 सितम्बर, 2021 से 14 सितम्बर, 2021 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से अधिकारियों/कर्मचारियों को संघ की राजभाषा में शत-प्रतिशत कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाता है।

"प्रहरी" के इस अंक की सभी रचनाएँ स्तरीय एवं सारगर्भित हैं। कार्यालय के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा से पत्रिका के इस अंक को सफल बनाने में बहुमूल्य योगदान दिया है, उन सबको मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ। आशा है "प्रहरी" निरन्तर अपनी सृजन-यात्रा को ऐसे ही गतिशील बनाए रखेगी।

जय हिन्द !

(रामावतार शर्मा)

आपका पत्र मिला

"प्रहरी" के 64 वें अंक वर्ष 2020–21 की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रूचिकर एवं प्रेरणा दायक है। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुडे विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गऐ हैं। पत्रिका में साज–सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

– वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिन्दी कक्ष
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार; लेखापरीक्षा.छत्तीसगढ,रायपुर

प्रहरी" के 64 वें अंक की सॉफ्ट प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं आकर्षक हैं। संपादक मण्डल द्ववारा रचनाओं का चयन एवं सामग्री का समावेश कुशलता से किया गया है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं। आशा है कि आपकी पत्रिका "प्रहरी" इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

– वीरेन्द्र सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, राजभाशा अनुभाग
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार; (लेखापरीक्षा). राजस्थान

"प्रहरी" के चौसठवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशसंनीय लेख एवं सुन्दर कवितायें लिखने का सराहनीय प्रयास किया है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुडे रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

– वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा. उ़त्तराखंड

'प्रहरी' के चौंसठवें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ एवं साज–सज्जा उत्कृष्ट हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ अतिप्रासंगिक, ज्ञानवर्धक एवं स्तरीय हैं। श्री राजू कुमार सिंह का लेख "मंदार पर्वत का महत्व", श्री के०एम० जयपुरियार का लेख 'मन स्थिति' प्रोत्साहित करने वाली हैं, श्री साम्भवी भास्कर की कविता 'पर्यावरण गीत', श्री अरूण कुमार की कविता 'बदलता समय', श्रीमती अमृता सिंह की कविता 'बिटिया' एवं सुश्री हीरा कुमारी की कविता 'प्रकृति का प्रांगण' आदि सभी रचनाएँ भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं।

–एस०के० सिन्हा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी अनुभाग) रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली।

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार ;लेखापरीक्षा रक्षा सेंवाएं, नई दिल्ली . 110001

"प्रहरी" के 64वें अंक (वर्ष 2020) की एक ऑनलाइन प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई। पत्रिका के आवरण–पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं पृष्ठों की साज–सज्जा बहुत ही सुंदर है, साथ ही साथ पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी राजभाषा गतिविधियों में संबंधित छायाचित्र काफी अच्छी लगी। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री वीरेन्द्र साहू (महात्मा गाँधी के एकादश व्रत), श्री मनोज कुमार–1 (आँख का ऑपरेशन), श्री विजय कुमार ठाकुर (हमारा धर्म, हमारा कर्म), श्री भुवन भास्कर (लॉक डाउन का लॉक अप), श्री मनीष कुमार महतो (हमारा कोलकाता) एवं श्री के०एम० जयपुरियार (राधा कृष्ण का प्रेम) की रचनाएं अत्यन्त ही सराहनीय है। पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादन मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका के निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

–चन्दन कुमार बढ़ई

हिन्दी अधिकारी/प्रशा, हिन्दी सेल

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार. लेखा एवं हकदारी. पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' के 64वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्च–स्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री विकास कुमार नं 1 की रचना 'कबीर साहब के विचारों की वर्तमान परिवेश में प्रासंगिकता', श्री वीरेन्द्र कुमार साहू की रचना 'महात्मा गांधी के एकादश व्रत' व श्री मो० दानिश की रचना 'क्रांतिकार कलमकार फणीश्वरनाथ रेणु' अत्यंत ही प्रशंसनीय व ज्ञानवर्धक है। इसके अतिरिक्त श्री विजय कुमार ठाकुर की कविता 'हमारा धर्म, हमारा कर्म, श्री अरूण कुमार की कविता 'बदलता समय', सुश्री अमृता सिंह की कविता 'बिटिया' व सुश्री हीरा कुमारी की कविता 'प्रकृति का प्रांगण' विशेष रूप से पठनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ व पत्रिका में दर्शायी विभिन्न गतिविधियों की झलकियां अति मनमोहक है। कृपया राजभाषा हिंदी से संबंधित लेख व प्रशासनिक शब्दावली भी पत्रिका में शामिल करें ताकि राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को और अधिक बल मिल सके। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक–मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

–वरि. लेखा अधिकारी (हिं.क.)

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार लेखा एवं हकदारी. कार्यालय,

हरियाणा, चन्डीगढ़

संपादकीय

इस वर्ष से प्रारंभ होकर वर्ष 2023 तक चलने वाला आजादी का अमृत महोत्सव हमें अपने वीर जवानों, स्वतंत्रता सेनानियों, और क्रांतिकारियों के त्याग, बलिदान और वीरता को याद रखने का महोत्सव है। इस महोत्सव का महत्व और बढ़ जाता है जब कोरोना जैसी वैश्विक घातक महामारी से जूझता देश वैज्ञानिकों,चिकित्सकों, स्वास्थ्यकर्मियों, पुलिस, सफाईकर्मियों के अनवरत,अथक प्रयासों से, सीमित संसाधनों के बल पर, पुनः खड़ा हो जाता है। यह महोत्सव देशवासियों को नई ऊर्जा, उत्साह और उमंग से भरने का कार्य करेगा। इसी प्रकार, इस बार के टोक्यो ओलंपिक तथा पैरा ओलंपिक में हमारे देश के युवा पीढ़ी ने अपने अद्भुत खेलों का प्रदर्शन कर न सिर्फ अपने संकल्पों को पूरा किया वरन अनेक स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतकर कोरोना के कारण नैराश्य में गोते लगाते देशवासियों में उत्साह और उमंग भरने का भी काम किया है ।

प्रत्येक सरकारी कर्मचारी और अधिकारी का यह संवैधानिक कर्तव्य है कि कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में करें। भाषाई गुलामी की प्रतीक, अंग्रेजी से स्वयं को मुक्त करें। हिंदुस्तान के सांस्कृतिक विरासत को यदि गहराई से समझना है तो हमें हिंदी अपनानी ही होगी क्योंकि भारतीय संस्कृति को समझने में हिन्दी ही सहायक हो सकती है,अंग्रेजी तो कदापि नहीं। विचारों का आदान–प्रदान जितनी सहजता, सरलता और संवेदनशीलता से हिंदी में हो सकता है, अंग्रेजी से असंभव है।

'प्रहरी' का 65 वाँ अंक ऐसे समय में आपके हाथों में हैं जब कोरोना का खौफ मन में छाया है और दिल में आजादी के अमृत महोत्सव का उत्साह भी है। इस अंक में भी आप पाएंगे कि पत्रिका में रचनाओं की विविधता है। अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाओं, लेखों, कविताओं और कहानियों से आपको मानसिक खुराक प्रदान की है।

'प्रहरी' के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए रचनाकारों के साथ–साथ प्रशासन, सामान्य अनुभाग, और हिंदी अनुभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के प्रति आभारी हूँ। महालेखाकार महोदय, वरीय उप महालेखाकार महोदय सभी उप महालेखाकार महोदय तथा पत्रिका के परामर्शी के प्रति भी आभारी हूँ जिनका मार्गदर्शन तथा सहयोग पत्रिका और संपादक मंडल को हमेशा प्राप्त होता रहा है। इस अंक पर भी आप सभी सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा। आपके सुझाव इस पत्रिका को बेहतर बनाने में हमेशा उपयोगी होते हैं।

आपका
मनोज कुमार

प्रदूषण से प्राकृतिक संपदा और मनुष्य का अस्तित्व खतरे में

सिद्धेश्वर प्रसाद
पूर्व संपादक 'प्रहरी'
पूर्व अध्यक्ष बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना

पर्यावरण प्रदूषण से प्राकृतिक संपदा के साथ–साथ मनुष्य का अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है। इसलिए हमें आने वाली पीढ़ी के सुरक्षित भविष्य के लिए प्राकृतिक नियम व विधियों का आदर करना होगा और इसके लिए हमें पर्यावरण के हित में काम करना होगा। साथ ही पर्यावरण के लिए खतरा बन रहे कारणों को समाप्त करना होगा, क्योंकि 21वीं सदी में पर्यावरण के संरक्षण की चिंता, प्रमुख चिंताओं में से एक है ।

पर्यावरण अर्थात हमारे आसपास के वातावरण में वात और आवरण दो शब्द हैं । वात को हवा कहा जाता है यानी वातावरण का अर्थ हुआ 'हवा का आवरण' । यह सर्वविदित है की हवा विभिन्न गैसों का मिश्रण है जिसमें ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन–डाई–ऑक्साइड तथा सल्फर–डाइ–ऑक्साइड प्रमुख है । पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण की वजह से भारी गैसें पृथ्वी की सतह पर रहती है और हल्की गैसें ऊपरी वातावरण में गुरुत्वाकर्षण के साथ–साथ ताप एवं सघनता के कारण भी गैसों की परतें बनती है। इसके परिणामस्वरूप वायुमंडल में 78% नाइट्रोजन 21% ऑक्सीजन 1% कार्बन–डाई–ऑक्साइड तथा अन्य गैसें होती हैं। इनकी कम या ज्यादा होने से पर्यावरण का संतुलन परिवर्तित होता है।

पर्यावरण में उपस्थित ऑक्सीजन गैस प्राणदायक है। मनुष्य सहित सभी प्राणी द्वारा ऑक्सीजन अंदर लिए जाते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड को पेड़ पौधे भोजन बनाने के लिए उपयोग करते हैं और ऑक्सीजन को छोड़ते है । कहा जाता है कि रात में जहाँ सूरज की रोशनी ना होने के कारण पेड़ पौधे कार्बन–डाइ ऑक्साइड छोड़ते हैं वही दिन में मनुष्य एवं सभी प्राणी ऑक्सीजन लेते है। इसीलिए कहा जाता है के दिन में पेड़–पौधों के नीचे में प्राणी को आनंद और सुख मिलता है । पर्यावरण में वायु के साथ–साथ जल, पथ्वी, जीव–जंतु, वनस्पति तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन भी शामिल है। यह सब मिलकर संतुलित पर्यावरण की रचना करते हैं।

कुछ इन्हीं सब कारणों के चलते आर्थिक विकास से जुड़ी परियोजनाओं और पर्यावरण सुरक्षा कार्यक्रम के बीच बेहतर तालमेल भी बहुत जरूरी है। यदि कोई पर्यावरण विरोधी परियोजना बनती है तो सरकार को ऐसी परियोजना लागू करने की बजाय सुरक्षा को अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए ताकि आर्थिक विकास और पर्यावरण के बीच बेहतर संतुलन बना रहे । विकास व प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए सरकार को इस बात के लिए भी सचेत रहना होगा कि पर्यावरण व परिस्थितिकीय तंत्र में प्रदूषण इतना न बढ़ जाए जिससे होने वाले खतरे को सहना प्रकृति के लिए असंभव हो जाए । इन्हीं सब कारणों से ग्लोबल वार्मिंग के खतरे संसार के लिए उत्पन्न हो रहे हैं ।

सच कहा जाए तो कोरोना वायरस महामारी के दौरान प्रदूषण भले ही समाप्त हो गया दिखा, मगर इसके पूर्व दमघोटू धुएँ और हवा में बढ़ते

प्रदूषण ने लोगों का जीवन हराम कर दिया था। हिमालय क्षेत्र भी इस समय बड़े दबावों और कड़ी चुनौतियों से जूझ रहा है। लिहाजा भारत के 16% से अधिक इलाके में फैले हिमालय क्षेत्र में शहरीकरण, पर्यटन, जल सुरक्षा, ऊर्जा, वन प्रबंधन और बुनियादी ढाँचे के विकास के मौजूदा तौर–तरीकों में बदलाव की जरूरत है। हिमालय क्षेत्र में अंधाधुंध बढ़ते भूमि के व्यवसायिक उपयोग और टूरिस्ट रिजॉर्ट के निर्माण से हिमालय के परिस्थितिकीय तंत्र को काफी नुकसान पहुंचाया है। इसलिए पूरे हिमालय क्षेत्र के राज्यों में भूमि कानूनों में तुरंत बदलाव किए जाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, हिमालय क्षेत्र तथा पहाड़ी इलाकों में पर्यटन को भी नियंत्रित करने की जरूरत है ।

हमें देश की नदियों की भी कद्र करनी चाहिए। नदी का पाट बढ़ रहा है और किनारों से मिट्टी घसक–घसक कर नदी की पेंदी में बैठा जा रहा है । जाहिर है नदी की गहराई कम हो रही है। एक तो पीछे से विशालकाय बांधों वगैरह के चलते धारा का प्रवाह कम हो रहा है। तलहटी में जमा हो रहे गाद और ऊपर से प्रदूषण व गंदगी की मार गंगा परियोजना 1984 में ही अमल में आ गई थी एक विशाल राशि खर्च करने के बाद भी हम यह कहने की स्थिति में नहीं है कि देश में नदियों की हालत किस प्रकार की है। नदियों के सवाल पर सिर्फ गंगा की हालत थोड़ी बहुत सुधरी हुई कही जा सकती है। प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने की मानव सोच ने हमारे आसपास महामारियों को और घातक रूप दे दिया है। आने वाले समय में प्लास्टिक, प्लास्टिक के बने सामान एक विशाल संकट का रूप ले सकते हैं। आज तक किसी ने यह नहीं सोचा होगा कि प्लास्टिक को नष्ट होने में कितना समय लगता है।प्लास्टिक जनित वस्तुओं को नष्ट होने में 800 से 1000 साल तक का समय लगता है इसी वजह से पृथ्वी पर प्लास्टिक का कचरा इतना अधिक जमा हो गया है कि पृथ्वी को चारों ओर से पांच बार लपेटा जा सकता है। ध्यान देने वाली बात यह है कि यह केवल भारत ही नहीं, विश्व के लगभग 40 देश प्लास्टिक कचरे के संकट से जूझ रहे हैं।

कोरोना वायरस महामारी का संकट जहाँ एक ओर दुनिया भर में कई चुनौतियों को जन्म दिया; वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक सौंदर्य के अद्भुत व जीवंत नजारों को भी हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया है। कोरोना वायरस की महामारी भी मनुष्य और प्रकृति के बीच पैदा हुए प्राकृतिक असंतुलन का एक दुष्परिणाम भी कहा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण पर एक कार्यक्रम में अपनी एक रिपोर्ट में इस बात की पुष्टि भी कर चुका है कि मनुष्यों में हर 4 महीने में एक नई संक्रामक बीमारी सामने आती है। इसके बावजूद हम भूलते जा रहे है, कि जैव विविधता को चोट पहुंचाना कितना खतरनाक हो सकता है। ध्यान से देखें तो आज आधुनिकता व वैज्ञानिकता का दंभ भरने वाली तमाम आर्थिक शक्तियां इस कोरोना महामारी के आगे विवश दिखाई पड़ी। यह बात ठीक है इस बीमारी की दवा खोज लेंगे फिर भी तब तक बहुत कुछ तबाह हो चुका होगा। इसलिए हमें जीवनशैली को इस तरह से अपनाना चाहिए कि पर्यावरण पर नकारात्मक असर न पड़े । यदि प्रदूषण को नहीं रोका गया तो प्राकृतिक संपदा के साथ–साथ मनुष्य के अस्तित्व भी इस संकट से मिट सकता है कवि उदय प्रकाश ने कहा है –

बचाना है तो बचाया जाना चाहिए गांव में खेत,जंगल में पेड़, शहर में हवा ।

हमारा आहार, विचार एवं व्यवहार

के एम. जयपुरियार,
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

वर्ष 2020, जिसे हमने कई मामलों में अपने लक्ष्य निर्धारण के लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष के रूप में चयनित किया था, जिसके कारण इसे कई प्रकरणों में विजन 2020 के रूप में जाना जाता था, परन्तु उक्त वर्ष ने अपने–आपको एक घातक वैश्विक महामारी 'कोविड 19 के समक्ष समर्पित कर दिया।

इस महामारी ने केवल हमारे देश और दुनिया के आर्थिक एवं सामाजिक परिदृश्य को ही कुप्रभावित नहीं किया बल्कि इसने हमें हमारे आहार, विचार एवं व्यवहार के प्रति सोचने के लिए विवश कर दिया।

देखा जाय तो हमारे आहार, विचार एवं व्यवहार हमारे जीवन के तीन ऐसे महत्वपूर्ण अंग हैं जो हमारे पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास के मेरूदण्ड हैं। अतः कहीं न कहीं हमने स्वयं इन तीनों तत्वों को कुत्सित कर अपने लिए खतरा मोल लिया। जबकि हमारे आर्यावर्त्त की सनातनी परंपरा इतनी समृद्ध और सबल है कि अगर हम सजग रहते हुए अपने आहार, विचार एवं व्यवहार का समुचित ध्यान रखें तो हमारे जीवन की कई समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाएगी।

'आहार', का अर्थ हम अपने शारीरिक अथवा मानसिक विकास के लिए जो भी ग्रहण करते हैं, वे सभी हमारे लिए आहार की श्रेणी में आते हैं। शरीर के विकास के लिए लिया गया भोजन चाहे वो सामिष हो या निरामिष, फल–फूल हो या कोई अन्य पेय पदार्थ सभी भोजन की श्रेणी में हैं; और हम सभी जानते हैं कि विभिन्न प्रकार के खाद्य या पेय पदार्थों का शरीर पर अलग–अलग प्रभाव पड़ता है। ठीक इसी प्रकार हमारे प्रवास का पर्यावरण /परिवेश, हमारी संगति, हमारा परिवार इत्यादि भी हमारे शारीरिक, मानसिक विकास के लिए आवश्यक तत्व हैं। अतः इन्हें भी हम आहार की श्रेणी में रख सकते हैं।

विचार, अर्थात हम क्या सोचते हैं या हमारी क्या धारणा है? सामान्यतः हमारा कर्म हमारी सोच की परिणति होती है और हर व्यक्ति की सोच अलग–अलग होती है। चूँकि व्यक्ति वही कर्म करना चाहता है जो उन्हें संतुष्टि प्रदान करता है और हरेक के लिए संतुष्टि का क्षेत्र और पैमाना अलग–अलग होता है। जैसे किसी को धन संचय करने में संतुष्टि है तो किसी को व्यय करने में, किसी को विद्या अर्जन में तो किसी को पद और प्रतिष्ठा प्राप्त करने में, किसी को सुंदर दिखने की लालसा होती है तो किसी को बलशाली, इत्यादि।

तो क्या हमारे विचार हमारे आहार से जुड़े है? इसका उत्तर हाँ में है क्योंकि हमारे शरीर में जाने वाले भोज्य व पेय पदार्थों के अपने रासायनिक गुण होतें हैं जो हमारे शरीर पर भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रभाव डालते हैं साथ ही हमारा परिवेश, परिवार और संगति भी हमारे मन को प्रभावित करते हैं जिस कारण हमारी सोच अर्थात विचार प्रभावित होते हैं।

और अंततः हमारा व्यवहार, अर्थात दैनिक कियाकलापों में हमारा समाज के सामने स्वयं को व्यक्त करना। वास्तव में यह हमारा व्यवहार ही है जो दूसरों के समक्ष हमारी पहचान बनाता है या समाज में हमें पहचान देता है। अर्थात हमारा व्यवहार ही हमे स्वयं को व्यक्त करने का अंतिम साधन उपलब्ध कराता है।

परन्तु यह व्यवहार हमारे विचारों की परिणति है क्योंकि जिस व्यक्ति के विचार जिस तरह के होंगे वह उसी प्रकार का व्यवहार प्रकट करता है। इस प्रकार हमारे आहार, विचार एवं व्यवहार एक दूसरे से अन्योन्याश्रय रूप से जुड़े हुए हैं।

इस वैश्विक महामारी ने ज्यादा नहीं परन्तु इतना तो बता ही दिया कि हमारे आहार, विचार एवं व्यवहार में कई खामियाँ थी जिसे हम पाश्चात्य जगत की नकल में कुत्सित करते जा रहे थे जबकि हमारी संस्कृति में पूर्व से ही इन तत्वों पर नियंत्रण के लिए कई साधन और निर्देश उपलब्ध हैं।

आहार पर नियंत्रण के लिए हमारे शास्त्रों एवं योग विज्ञान में अच्छी तरह से समझाया गया है और यह भी निर्देशित है कि कब, किसे, कितना और किस प्रकार का भोजन किया जाना चाहिए। साथ ही हमारा स्वच्छ परिवेश एवं सज्जनों की संगति उन शास्त्रों के मूल सिद्धांतों में से एक है परन्तु हम इन्हें नकारते जा रहे है। फलतः इसके परिणाम भी हमें भोगने पड़ रहे हैं। इस प्रकार हम अपने शरीर एवं मन के विकास के लिए ग्रहण किये जा रहे तत्वों पर ध्यान न देकर दूसरों की नकल करने में अपने को आधुनिक मान रहे हैं।

साथ ही जब हमारे आहार ही हमारे परिवेश, प्रकृति और स्वभाव के प्रतिकूल हों तब हमारे विचारों का दूषित होना तो अवश्यम्भावी है और दूषित विचार हमारे गलत व्यवहारों का जनक है।

अगर हम अपने विचारों की बात करें तो यह समझना आवश्यक है कि ये व्यक्ति आधारित हैं जो उनके संतुष्टि के क्षेत्र एवं सीमाओं पर निर्भर है जो हमारे स्वंय के विकास के लिए ग्रहण किए गये विभिन्न तत्वों पर आधारित होता है । अतः सबसे पहले हमे यह मान लेना चाहिए कि किसी दूसरे की संतुष्टि की सीमा और क्षेत्र मेरे स्वयं से भिन्न है। अतः इसमें अनावश्यक प्रतिस्पर्द्धा की अवश्यकता है ही नहीं।

हमारा व्यवहार जो हमारी पहचान है, परन्तु उसका निर्णय अक्सर दूसरे करते है, उसे अच्छा कैसे बनाया जाय इसका सबसे सीधा और सरल उपाय है कि हम ऐसे कार्य करें जिससे दूसरों को अकारण पीड़ा न हो क्योंकि यह सर्वविदित है कि **'अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनम् द्वयम', परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीड़नम्।।**

इसके लिए हमें सतत् अपने व्यवहारों का साक्षात्कार करते रहना होगा। और न केवल अपने व्यवहार का वरण अपने आहार एवं विचारों का भी आत्म निरिक्षण भी उतना ही आवश्यक है। हम योग विज्ञान के विभिन्न तरीकों अर्थात आसन, प्राणायाम एवं ध्यान आदि कियाओं से इनका निरिक्षण एवं नियंत्रण कर सकतें हैं। बस हमें द्रष्टा भाव से अपने आहार, विचार एवं व्यवहारों का आत्म निरिक्षण करना प्रारम्भ करना है और फिर इनकी त्रुटियाँ स्वतः परिलक्षित होने लगेंगी। हमारे भारतीय एवं सनातनी पंरपरा में पाश्चात्य जगत के विपरीत शारीरिक स्पर्श की आवश्यकताएं बहुत ही सीमित हैं इसलिए हम दूसरों को अभिवादन के लिए भी अपने हाथों को अपने हृदय से लगाकर प्रणाम करतें है जिससे अकारण हमारी उर्जाओं का सम्मिलन न हो क्योंकि योग शास्त्र के अनुसार हमारे

भौतिक शरीर के बाहर भी कुछ उर्जा चक्र होते हैं जिसका हमारे जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव होता है।इस महामारी काल ने हमें एक मौका दिया जिसमें हम अपना, अपने आहार, विचार एवं व्यवहारों का आत्मनिरीक्षण कर सकें और यह भी बताया कि हमारा परिवेश कितना स्वच्छ हो और संगति कितनी संयमित हो, कैसे हम एकाकी होकर अपने अंदर की उर्जा से विभिन्न प्रकार के सकारात्मक विचारों का सृजन कर सकते हैं, हमारे दैनिक कार्यों में हमारा व्यवहार कैसा हो जिससे भौतिक स्पर्श को संयमित कर न केवल अपनी सकारात्मक उर्जा को न गवाएँ बल्कि किसी नकारात्मक उर्जा की चपेट में भी न आएं।

तो आईए एक बार फिर से अपने आहार, विचार एवं व्यवहार का आत्मनिरीक्षण करें और इन्हें सयंमित कर अपनी सकारात्मक उर्जा का उपयोग करते हुए समाज में अपनी ऐसी पहचान बनाने का प्रयास करें जिससे हमारे भारतीय होने पर न केवल हमें बल्कि पूरे विश्व को गर्व हो।

कविताओं में जीवन

जयप्रकाश मल्ल

से०नि० वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

इन कविताओं में जीवन है
या जीवन की कविताई है
विप्लव का यह शंखनाद, या
खुशियों की शहनाई है।।

बीज तोड़ कर बिरवा निकला।
आँधी तूफाँ झेल रहा
तन कोयल और मन निश्छल
फिर भी खतरों से खेल रहा।।

बाड़े में वह कैद भला क्या
तन मन पावन रख पाएगा
या फौलादी जिस्म बनाकर
खुद खतरों से टकराएगा।।

भरी दोपहरी, जलता सूरज,
सिकुड़ी सिमटी परछाईं है
इन कविताओं में जीवन है
या जीवन की कविताई है।
विप्लव का यह शंखनाद,या
खुशियों की शहनाई है।।

नीर प्यार का पाना हो तो
जड़ को गहरे जाना होगा
नील गगन में फैला बाँहें
शबनम गले लगाना होगा।।
इस त्रासद जीवन के पार,
धरा पर छाँव स्नेह के छाएँगे।
कलरव पक्षी के गूँजेंगे
खूब मिलकर जश्न मनाएँगे।

वह देखो तो दूर गगन में
प्यार की बदली छायी है।
इन कविताओं में जीवन है
यह जीवन की कविताई।
विप्लव का यह शंखनाद, या
खुशियों की शहनाई है।।

परमगति

विकास कुमार नं0. 1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वर्गिक हिम उपत्यका से निःसृत
कल–कल सी निर्झरित
शांत, सुरम्य, सुवासित
नैसर्गिक छटा में लिपटी
विहसती, चुलबुल–बुलबुल सी
स्मित, हास, विनोद, आभा मण्डित
धरा पर अवतरित
खिल–खिलाती, अठखेलियाँ मचाती
वेग, उद्वेग को धाराओं में सिमटाती
जीवन दायिनी, पुण्य सलिला,
आरोह–अवरोह भरे जीवन में
जीवन्तता की स्वर लहरियाँ बिखेरती
सतत् काल संग प्रवाहमान
वो आज चिर निद्रा में लीन हो गयी।
निस्तेज, निष्प्राण, बेसुध
निस्तब्ध, निरूत्तर, निस्पृह
अपूर्व शांति को प्राप्त
असीम सागर में समा गयी।
पद्मा महासागर में विलीन हो गयी।
मौन एक जीवन, धवल, नवल
शाश्वत, चिरन्तन सत्य निरत, लीन
उद्गम से उद्भूत, गंतव्य की ओर
महाप्रयाण।
नीड़ से निर्वाण की ओर।
गतिमान जीवन को छोड़।।
निवृति परमगति की ओर....।।

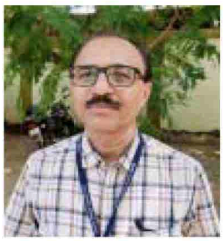

मोतिहारी से नाता है महान ब्रिटिश उपन्यासकार जॉर्ज ऑरवेल का

मनोज कुमार नं० 1
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

विश्व साहित्य में अंग्रेजी भाषा के प्रसिद्ध उपन्यासकार, आलोचक जॉर्ज ऑरवेल का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'एनिमल फार्म' तथा '1984', अंग्रेजी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह सुखद संयोग है कि ऐसे महान उपन्यासकार का जन्म बिहार के चम्पारण की धरती पर स्थित मोतिहारी शहर में 25 जून 1903 को हुआ था। चम्पारण की धरती जहाँ महात्मा गाँधी ने भारत में पहला सत्याग्रह आंदोलन चलाया था, जो गाँधी जी की कर्मभूमि बनी, वही धरती जॉर्ज ऑरवेल की जन्मभूमि बनी। प्रतिष्ठित टाइम मैगजीन ने वर्ष 2008 में 1945 ई० के बाद जिन महत्वपूर्ण ब्रिटिश साहित्यकारों की सूची बनाई उसमें जार्ज ऑरवेल का नाम दूसरे स्थान पर था।

जॉर्ज ऑरवेल का असली नाम एरिक आर्थर ब्लेयर था, इनके पिता रिचर्ड बालमेसले ब्लेयर भारतीय सिविल सेवा के अधिकारी थे तथा अफीम विभाग में कार्यरत् थे। जन्म के एक वर्ष बाद उनकी माँ उन्हें लेकर ब्रिटेन आ गई थी। इंगलैण्ड के कॉनवेंट स्कूलों में उनकी शिक्षा हुई। कॉलेज की पढ़ाई के बाद वे ब्रिटिश भारत के अर्न्तगत बर्मा में पुलिसकर्मी के रूप में तैनात हुए। पुनः वे माण्डले में सहा० जिला सुपरिटेंडेन्ट के रूप में नवम्बर 1922 से कार्य किया।

उनकी रूचि कॉलेज के समय से ही एक आलोचक के रूप में लेख लिखने में थी। उनका प्रथम उपन्यास 'एनिमल फार्म' 1945 ई० में प्रकाशित हुआ जो कि 1917 की रूसी क्रांति की घटनाओं और स्टालिनवाद के ऊपर था। इस उपन्यास के प्रकाशन में उन्हें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। प्रकाशन के बाद ब्रिटेन में यह उपन्यास काफी चर्चित हुआ, तथा उनको काफी प्रसिद्धि मिली।

उनकी दूसरी प्रसिद्ध पुस्तक '1984' थी। इस पुस्तक को उन्होंने 1948 ई० में लिखा था, जिसका प्रकाशन 1949 ई० में हुआ था। इस पुस्तक में उन्होंने अपने समय काल से बहुत आगे के समय की कल्पना की थी जिसमें राजसत्ता अपने नागरिकों पर नजर रखती है और जनता को बुनियादी हक देने के पक्ष में नहीं होती है। सत्ता हमेशा अपने विरूद्ध सवाल उठाने वाली आवाज को बन्द कर देना चाहती है। इस पुस्तक में तकनीकी पर निर्भर उस दुनिया की कल्पना की गई थी जहाँ व्यक्ति की निजता छुपी नहीं रह सकती है। इस पुस्तक में जॉर्ज ऑरवेल 'विग ब्रदर इज वाचिंग यू' जैसी अवधारणा की बात करते हैं। वर्त्तमान परिदृश्य में जब दुनियाँ इलेक्ट्रॉनिक और इन्टरनेट से जुड़े गैजेट्स के परिधि में आ गई है तो जॉर्ज ऑरवेल की अवधारणा सच होती हुई दिखाई दे रही है। कह सकते हैं कि जॉर्ज ऑरवेल की कल्पना अपने समय से बहुत ही आगे की थी।

इस पुस्तक से उनकी ख्याति काफी बढ़ गई। वे फासीवाद, नाजीवाद और स्टालिनवाद की समान रूप से आलोचना करते थे। वे अधिनायकवाद को मानवता के लिए खतरा मानते थे। इस तरह कह सकते हैं कि गाँधी तथा जॉर्ज ऑरवेल के विचार काफी करीब थे। दुर्भाग्य से जॉर्ज ऑरवेल का देहांत तपेदिक से 21 जनवरी 1950 को लगभग 46 वर्ष की उम्र में हो गया। वे राजनीति को केन्द्र में रखकर लिखने वाले उपन्यासकार थे।

उनके घर की खोज 1983 में एक ब्रिटिश पत्रकार इयान जैक ने की थी। पत्रकार एवं डाक्यूमेंट्री फिल्म निर्माता विश्वजीत मुखर्जी ने मोतिहारी शहर और जॉर्ज ऑरवेल पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाई थी उसके बाद मोतिहारी के लोगों को उनके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त हुई। कुछ महीने पहले मुझे मोतिहारी प्रवास के दौरान उनकी जन्मभूमि देखने का मौका मिला। निश्चय ही उनकी जन्मभूमि को स्मारक/म्यूजियम बनाया जाय तो यह लोगों के आकर्षण खासकर ब्रिटिश नागरिकों/साहित्य प्रेमियों के आकर्षण का केन्द्र बन सकता है और पयर्टन उद्योग को बिहार में बढ़ावा मिल सकता है। यद्यपि कुछ वर्ष पहले बिहार सरकार के मुख्यमंत्री ने उनके घर को म्यूजियम बनाने की घोषणा की थी, पर अभी काफी कुछ काम किया जाना बाकी है।

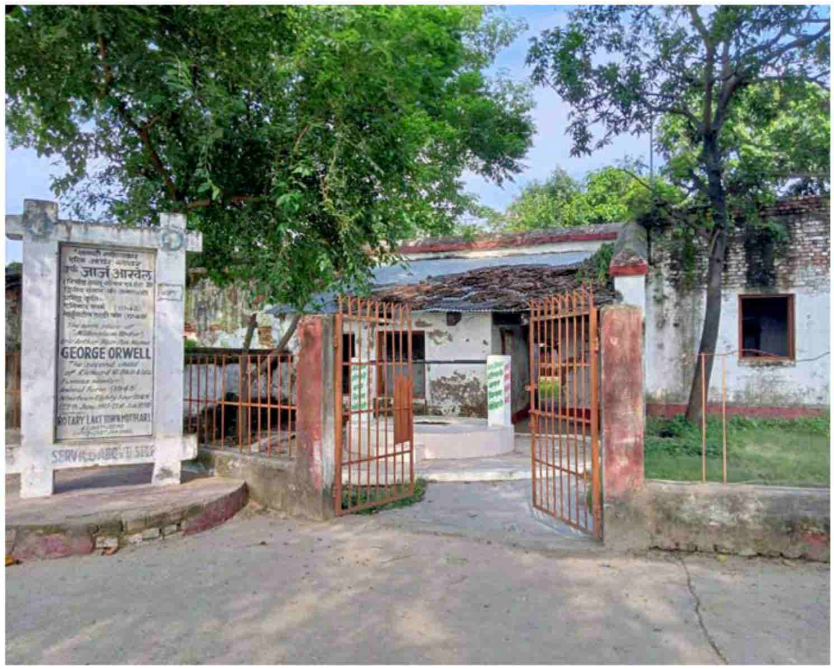

सूरज फिर निकलेगा

श्याम दत्त मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

तू कब हारा है ?
जो अब हारेगा ?
कब डरा है ?
जो अब डरेगा
तू चलता रहा है
चलता रहेगा।

तू कब थमा है
जो अब थमेगा
माना कि
वक्त का पहिया
हो गया धीमा
पर वह कब रूका है
जो अब रूकेगा!
तोड़ने हौसला
खड़ा तूफान दर पर
पर तू कब टूटा है
जो अब टूटेगा ?
बिखर जाएगा
टकराकर तुझसे
आजमाकर तुझे
वह लौट जाएगा।

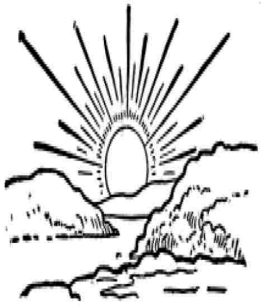

ये रूत बदलेगी
रूदन भी बदलेगा
लम्हा–लम्हा
ये रात ढलेगी
आहिस्ता आहिस्ता
सूरज फिर निकलेगा
तू हँसता रहा है
हँसता रहेगा
जग में तुझ–सा
न कोई हुआ है
न कोई होगा।

बाजार

रूपेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

लगा है, बहुत ही खूबसूरत
दुनिया का बाजार!
नहीं होती इस बाजार की शोभा
रोजमर्रा की जरूरत की
रंगबिरंगी वस्तुओं से,
चमकता है यह बाजार
दया, धर्म, ईमान और आबरु के
मँहगे–सस्ते, गहरे–फीके रंगों से!
बिकता है यहाँ कुछ मुनाफे में,
कुछ घाटे में
और बिक जाता है यहाँ बहुत कुछ साँस लेने में भी!
खड़ा है इसी बाजार में, वह भी बेचने और खरीदने वालों की भीड़ में
एक कोने में, उसके साथ
जिसे बेचना नहीं,
दान करना है!
अभिशप्त है वह निर्दोष, युगों युगों से,
उसे दान करने को
जो पनपती है उसके ह्रदय की भूमि पर
जिसे सींचता है वह असीमित स्नेह से,
श्वेत–कणों के साथ अपने रक्त से!
पर पाप है उसके लिए,

अपने कलेजे के टुकड़े को,
अपने घर में रखना!
मगर अफसोस!
तैयार नहीं होता कोई खरीदार
उसके हृदय के टुकड़े का दान
स्वीकारने हेतु!
पता है सभी को,
कि है वह बेशकिमती।
बरसेगी वह उनके लिए
प्रेम और ममता की घटा बनकर,
लहलहाएगी उनके खानदान की फसलें
उसी के बल पर!
पर उन्हें तो चाहिए
दान स्वीकार करने का पुरस्कार,
क्योंकि दानकर्त्ता का नहीं
और कोई आधार!
आखिर चुकाना पड़ता है उसे
दान करने का मूल्य,
घर जमीन और खुद को भी बेचकर!
और प्रकट करनी होती है, अपार कृतज्ञता,
होना पड़ता है जन्म भर का ऋणी,
उसके प्रति, जिसे चुकाया है उसने
वह अनमोल दान स्वीकार करने का मूल्य!
इस तरह दुनिया के बाजार में,
मानवता के साथ–साथ,
बिकता रहता है पिता,
और दान होती रहती है बेटियाँ!

पश्चाताप

अजय कुमार झा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी(तदर्थ)

रात के 11:00 बज रहे थे। काली स्थान के आसपास कुछ लोग जमा थे। मंदिर की चौखट पर लखन पंडित की छोटकी बहू गायत्री, अपने लड़के को गोद में लिए रोए जा रही थी और चौखट की धूली उसके पूरे शरीर पर मल रही थी। बच्चा बुखार से तप रहा था। कोरोना वायरस का शुरुआती दौर था, जब लोग इतने डरे थे कि बुखार होने का मतलब कोरोना और कोरोना का मतलब मौत समझते थे। इसी भय के कारण कोई पास भी नहीं आ रहा था। वृद्ध लखन पंडित को समझ नहीं आ रहा था वह करे तो क्या करे बहुत मिन्नतों के बाद एक ऑटो वाला अस्पताल जाने को तैयार हुआ, लेकिन गायत्री ने साफ मना कर दिया।

"अब काली मईया रक्षा करें या गोद सुनी कर दें इन्हीं के ऊपर छोड़ दिये हम कहीं नहीं जाएंगे जाने मैया इनसे ऊपर कौन डॉक्टर वैद्य है ?

वह हाथ जोड़कर काली मां की प्रतिमा के समक्ष

बैठ गयी। लखन बाबा गीले कपड़े से बच्चे का शरीर पोछते रहे और सर पर पट्टी बदलते रहे। इसे दैवीय कृपा कही जाए या संयोग, लगभग 2:00 बजे के बाद बुखार उतरना शुरू हुआ और बच्चा धीरे–धीरे सामान्य होने लगा । गायत्री का भी मन शांत हुआ। हाथ जोड़े मुद्रा में चौखट से टिक कर बैठे–बैठे कब आँखें बंद हो गयी, उसे पता भी नहीं चला।

गायत्री कुम्हार टोली की सबसे लोकप्रिय महिला थी। हमेशा खुश रहने वाली, जिंदादिल। इतनी कम उम्र में ही उन पर अनेकों दुखों का पहाड़ टूटा था लेकिन उनके चेहरे की मुस्कान कभी फ़ीकी नहीं पड़ी।

एक विशिष्ट प्रकार का आत्मविश्वास तो शायद गंगा के उत्तरी छोर की मिट्टी में है ,विशेषकर कुरसेला से लेकर बेगूसराय तक के क्षेत्र के लोगों से मिलेंगे तो आपको आत्मविश्वास और बेफिक्री का एक अलग स्तर देखने को मिलेगा।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी चित्त को प्रसन्न रखना उनकी जीवन शैली की विशेषता है। गायत्री भी उसी मिट्टी पानी में पली बढ़ी थी तो बेबाकी और खुशमिजाजी उनके स्वभाव में शामिल था। अनूपम सौन्दर्य उन्हें ईश्वर से मिला अतिरिक्त उपहार था।

उनके विवाह के पूर्व पिता को उनकी सुंदरता पर गर्व था और वह अक्सर कहा करते थे–

" एक सिक्का खर्च किए बिना यह किसी अफसर से ब्याही जाएगी"

परंतु गायत्री का भाग्य तो कहीं और ही विधाता ने तय कर रखा था । पति निहायत ही आलसी और कामचोर था। चोरी छुपे शराब बेचते पकड़ा गया था और अभी जेल में बंद था ।

गायत्री पिछले 3 दिनों से बच्चे को लेकर परेशान थी। दवाई मेडिकल स्टोर से पूछ कर लाती पर बच्चे का बुखार कम होने का नाम नहीं ले रहा था। पी एच सी के डॉक्टर साहब तो कमरे से भी नहीं निकलते थे। उनका फरमान था कि जब तक पी पी ई किट नहीं मिलता किसी मरीज को नहीं देखेंगे। वैसे भी गायत्री डॉक्टर के पास जाने से बचती थी। कहती –

"हजार रुपए जाँच के हों तभी तो डॉक्टर के पास जाएँ मामूली बुख़ार में भी सबसे पहले डॉक्टर साहब पचहत्तर जाँच लिखते हैं।

आखिरकार काली मैया पर सबकुछ छोड़ देना ही उन्हें श्रेयस्कर लगा था।आजकल पैसों की भी तंगी थी। पति के जेल जाने के बाद उन्होने एक साड़ी की दुकान में काम करना शुरू किया था। परंतु लॉकडाउन में वह भी बंद था। उस नौकरी के लिए भी उन्हें ससुर से ना जाने कितनी गालियां सुनने को मिली थी।

जो कुछ पैसे बचाए थे अब खत्म होने को थे। सरपंच ने कहा था पति के बेल में वकील सात हजार से कम में नहीं मान रहा।

एक तो आमदनी ठप्प ,परिवार का पूरा खर्च माथे पर उस पर कोर्ट कचहरी का चक्कर। गायत्री सोच–सोच कर अंदर ही अंदर सूखे जा रही थी। सोचती तो उसका माथा फटने लगता।

वह थी भी बड़ी स्वाभिमानी चाहे कितनी ही तकलीफ़ क्यों ना हो, किसी के सामने हाथ फैलाना उन्हें पसंद नहीं था। मेहनत से चार पैसे कमा ले, लेकिन किसी का अहसान नहीं ले सकती थी।

लॉकडाउन बढ़ता ही जा रहा था, साथ ही साथ उनकी परेशानियां भी। दो महीने तो किसी तरह कट गए थे लेकिन अब खाने–पीने की भी दिक्कत हो रही थी। सरकारी अनाज तो मिल गए थे लेकिन सिर्फ अनाज काफी नहीं था

। सब ने कहा खाते में पैसे भी आ

रहे हैं लेकिन इनके पासबुक को तो मैनेजर ने गुस्से में फेंक दिया था और कहा था–

"अकाउंट में दो सौ रुपए हैं और रोज़ चली आती हो बैलेन्स चेक कराने हमलोग तो इतने बेकार बैठे हैं यहाँ।"

जब परेशानियां बहुत अधिक बढ़ने लगी तो उसने सोचा चल कर दुकान के मालिक से कुछ एडवांस ले आती हूँ, जब दुकान खुलेगी, ड्यूटि कर पैसा चुका दूंगी।

दुकान के मालिक सेठ जी के नाम से प्रसिद्ध थे ,परंतु स्वभाव से निहायत ही कंजूस। सामान्य दिनों में भी पगार किसी को समय पर ना दें, एडवांस की तो बात ही दूर थी। अभी तो लॉक डाऊन का बहाना भी था। हालाँकि जुबान के चतुर थे और बातों से किसी को निराश नहीं करते थे। स्वयं के फायदे के अनुरूप किस से किस प्रकार से काम निकलवाना है ,बखूबी जानते थे। कपड़ों के अलावा भी उनके कई तरह के कारोबार थे और उन्होंने अच्छी ख़ासी संपत्ति बनाई थी। उम्र वही कोई पैंतालीस के आसपास ठहरती होगी। पत्नी बच्चों को साथ लेकर शहर में रहती थी। कोई कहता बच्चों की शिक्षा के लिए घर बार छोड़ रखा है तो कोई सेठ जी के साथ अनबन को कारण बताते।

सेठ जी का कारोबार ही था साड़ियों का,और इस कारोबार में वाणी की चतुरता पहली प्राथमिकता होती है। ग्राहकों के अनुरूप वह हँसी दिल्लगी करने से भी नहीं चूकते। उनके इसी स्वभाव की वजह से लोग कई तरह की बातें करते। कईयों ने गायत्री को भी आगाह किया था। हालाँकि गायत्री को इससे अंतर नहीं पड़ता था, ऐसे लोगों को उनके दायरे में रखना गायत्री को भली भाँति आता था।

विवाह के बाद भले स्वभाव में थोड़ी स्थिरता आ गई थी वरना विवाह के पूर्व तो अव्वल दर्जे के छिछोरे भी उससे भय खाते थे। बहुत विचार करने के बाद आज वह सेठ जी के पास एडवांस पैसों के लिए आई थी। सेठ जी की कृपणता से वाकिफ़ होने के कारण संकोच भी हो रहा था,लेकिन दूसरा कोई रास्ता भी दिखाई नहीं दे रहा था।

"कैसी हो गायत्री ?? बच्चे की तबीयत ठीक है" सेठ जी ने उन्हें देखते ही पूछा।

" हां सेठ जी ! काली मैया की कृपा थी , नहीं तो मेरी गोद सून ही थी। " गायत्री ने आंखें नीची करते हुए जवाब दिया।

"सब की रक्षा करने वाली वही हैं, देख रही हो अदने से वायरस के सामने पूरी दुनिया लाचार है। सबको कैदी बना के छोड़ दिया है । अब सबकुछ उनके ही हाथों में है। सेठ जी ने भक्ति भाव की मुद्रा में कहा।

"सेठ जी! पैसों की दिक्कत थी, कुछ एडवांस मिल जाए तो घर का काम चले इसके पापा का बेल कराने में भी ख़र्च है। सोचते हैं ये जेल से छूटे तो मेरा बोझ कुछ तो हल्का हो । घर चलाते–चलाते अब थक गए हैं।" गायत्री ने धीरे से कहा ।

सेठ जी के पास अभी एडवांस ना देने का सबसे सरल बहाना था –

" देखो गायत्री! तुम तो सबकुछ देख रही हो , धंधा पानी सब ठप पड़ गया है,महाजन से पूंजी लेकर माल लाया था, सब फँसा पड़ा है,ऐसे में घर का खर्च मुश्किल हो रहा है, एडवांस कहां से दें.।."

गायत्री "सेठ जी आपका एडवांस डूबेगा नहीं इसके जेल से छूटते ही वापस कर देंगे नहीं कर पाये तो भी दुकान को तो आज ना कल खुलना ही है काम करके सब सधा देंगे।"

सेठ जी ने अब अपनी चतुराई का परिचय देते हुए कहा –

" एडवांस तो अभी मैं देने की स्थिति में नहीं हूँ लेकिन तुम्हें ज़रूरत है तो मै कुछ ना कुछ बंदोबस्त जरूर करूँगा तुम्हें बुरा ना लगे तो एक बात बोलूँ ??"

गायत्री –"हाँ कहिए! "सेठ जी" – दुकान खुलने का तो अभी कुछ ठिकाना नहीं है लेकिन मुझे घर पर माँ की सेवा के लिए आदमी की जरूरत है, यदि तुम कुछ दिन संभाल दो तो बड़ी मेहरबानी हो जाएगी । मैं उन्हें समय पर भोजन भी पका कर नहीं दे पाता हूँ ।"

गायत्री को सुन कर थोड़ा अजीब सा लगा । उसने दुकान में ही काम बहुत मजबूरी में शुरू किया था अब चाकरी भी करनी पड़ेगी ?? वह संशय मे थी सोचने लगी।

"पिताजी को या भैया को यदि पता चलेगा तो उनके दिल पर क्या बीतेगी ?? इस सेठ की इतनी हिम्मत कि हमसे चाकरी कराएगा मेरे मायके जाकर देख ले तो इसे समझ आए मेरी औकात हाय मेरी किस्मत!! काश उस दिन मैं घर लौट कर नहीं आती वंशी ने तो कहा था मुझे रत्ती भर तकलीफ नहीं होने देगा ना जाने कहां से घर का मोह उमड़ पड़ा और अपनी किस्मत खुद ही आग में झोंक दी। मैं उस गंगाजल के समान पवित्र हृदय की गुनहगार बन गयी । कोई और होता तो शरीर से प्रेम करता लेकिन उस देवता ने हफ़्ते भर साथ रहने के बावजूद हाथ नहीं लगाया। साफ कहा था..... जब तक विधानपूर्वक मांग में सिंदूर नहीं भरेगा हाथ नहीं लगाएगा ना जाने क्यों पंडित जी की पत्नी ने उस वक़्त पंचक

बता दिया और मैं वंशी के साथ उस दिन ब्याही नहीं गयी। मुझे कहां मालूम था मेरी कम उम्र की सजा उसे मिल जाएगी। यदि नियम कानून समझती तो कभी पिता जी की बात पर वापस नहीं आती । वापस आकर मैंने हँसते खेलते देवता को जेल भिजवा दिया । पिताजी ने भी मेरे साथ छल किया, देवता स्वरूप इंसान को जेल भिजवा कर मुझे पियक्कड़ की खूंटी से बांध दिया। "

सेठ जी के गले की कृत्रिम खरास से गायत्री का ध्यान भंग हुआ। सोचा अब क्यों मैं बीती बातों को सोच रही हूँ ,ईश्वर ने जो भी मेरे लिए विहित किया है वहीं मेरे भाग्य के लिए सर्वोत्तम है। वह जो कुछ भी निर्धारित करता है हमारे भले के लिए करता है।

उसने सेठ जी से कहा–" घर पर पूछ लेती हूँ एक बार"

गायत्री लौट आई। नींद नहीं आ रही थी.....रात भर सोचती रही .

"दुनिया में कोई भी आफत आए,चोट गरीब के ही माथे पड़ती है। चमगादड़ और साँप खाया किसने और भुगत कौन रहा है ना जाने मेरे जैसी कितनी दुखिया होगी दिल्ली, बंबई, कलकत्ता से जो लोग पैदल भाग रहे हैं। उनपर क्या गुजरती होगी सड़क पर चलते भूखे बच्चे की आह लगेगी जिसने भी इस काल को भेजा है। इसी समय वकील मुख्तार का भी चक्कर पड़ा है सेठ की जेब से तो कौड़ी न निकले लक्ष्मी जी भी ऐसे ही पत्थर लोगों के घर विराजती हैं। "

सोचते–सोचते उसकी आंखें लग गई। सुबह उठी और बिना किसी से कुछ बताए नहा धोकर सेठ जी के यहां चली गई। काम शुरू कर दिया। काम करने रोज जाती लेकिन सर पर बोझ सा पड़ा रहता। काफी परेशान रहती,बच्चे पर चीखती रहती। ससुर भी खींझ का शिकार बनते।

कुछ दिन यूं ही बीत रहे थे। शुक्रवार का दिन था, गायत्री पूजा पाठ कर, जल्दी जल्दी भोजन पकाकर काम पर चली गई। अभी घंटा भी नहीं बीता था कि खबर हवा की तरह फैल गई।

गायत्री ने मूसल सेठ जी के सर पर दे मारा था, उन्हें अस्पताल ले जाया गया है। पुलिस गायत्री को गिरफ्तार कर लाख पूछती रही, पर उन्होने कुछ कारण नहीं बताया। सेठ जी भी कुछ बताने की स्थिति में नहीं थे। उनकी मां ने बताया कि गायत्री ने उनके लड़के पर मूसल से प्रहार किया है। उनके बयान के आधार पर पुलिस ने गायत्री को जेल भेज दिया।

जिसने भी सुना उसे आश्चर्य हुआ । गायत्री नाहक ऐसा क्यों करेगी?? कोई दुश्मनी तो थी नहीं। गायत्री जैसी महिला भले मुहल्ले में चौधराईन थी, लेकिन बाहर उसकी जुबान नहीं खुलती थी। कोर्ट कचहरी के नाम से वह काँप जाती थी । वह ऐसा कैसे कर सकती थी ?? सबके लिए यह कौतूहल का विषय बन गया था । दबी जुबान सभी सेठ जी की ओछी नियत की चर्चा करने लगे थे। गायत्री के लिए सबके मन में सहानुभूति थी। सच्चाई तब सामने आई जब उनकी जेठानी से रहा नहीं गया और वह गायत्री से मिलने जेल पहुँची । गायत्री ने उन्हें सबकुछ बता दिया।

"सेठ की नियत शुरू दिन से ख़राब थी, मैंने उसे संकेतों में समझाने की कोशिश की थी कि अपनी हद में रहे लेकिन उसपर असर नहीं हो रहा था। उस दिन मैं सेठ की रसोई में

` खाना पका रही थी, सेठ बिना वजह रसोई में घुस जाता था। इनको जेल से छुड़ाने का लालच देकर मुझे कमजोर और अबला समझने की गलती कर बैठा। मुझसे बर्दाश्त नहीं हुआ तो मैंने मुसल सर पर दे मारा।"

"तो तुमने थानेदार से ये बातें क्यों नहीं बताई ?" जेठानी ने आश्चर्य से पूछा।

"थानेदार क्या करता ? उससे पैसे ऐंठता, मुझे कचहरी के चक्कर लगवाता ,सत्तर बार गवाही और पूछताछ में मैं मारी–मारी फिरती । इसलिए मुझे उस वक्त जो ठीक लगा मैंने उसे सबक दे दिया। अब उसकी हिम्मत नहीं पड़ेगी किसी के बारे में बुरा सोचने की।" दोनों हंसने लगे। गायत्री के चेहरे पर न कोई भय था ,न कोई पश्चाताप । शायद उनको अपने आप पर गर्व हो रहा था।

हम अक्सर कहते हैं कि, हमारा समाज विविधताओं से भरा पड़ा है,परंतु मनुष्य की प्रवृत्ति में भी इतनी विविधता ? जहां एक ओर समूचा विश्व कोरोना की मार से त्रस्त है, जहां एक ओर डॉक्टर, नर्स पुलिस अपनी जान की परवाह किए बगैर दिन रात लोगों को बचाने की मुहिम में लगे हैं, जहां झुंड के झुंड लोगों के जीवन का एकमात्र उद्देश्य किसी भी तरह घर पहुंचना है वहीं कुछ मनुष्य ऐसी परिस्थिति को भी शोषण के अवसर के रूप में देख रहे हैं।

ईश्वर ने समस्त जीवो में श्रेष्ठ मनुष्य की रचना इसलिए नहीं की होगी कि कोई मनुष्य शक्ति और धन के मद में चूर होकर, अपने से कमजोर, बेबस लोगों को तुच्छ समझे और उसका अनादर करे।

उधर सेठ जी पर भी पता नहीं किस बात का असर हुआ था, वह आत्मग्लानि से मरे जा रहे बस कचहरी जाते, मारे मारे फिरते । कई अच्छे वकीलों से बात की थी ,सभी से कहते, जितनी जल्दी संभव हो, पति पत्नी को जेल से बाहर निकालना है। शायद उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया था। चारों ओर उनकी थू थू हो रही थी। ऐसे समय में प्रायश्चित का तत्काल एक यही साधन उन्हें सूझ रहा था कि, किसी भी तरह दोनों को जेल से निकालें। उनकी आत्मा अदृश्य पीड़ा की आग में अंदर ही अंदर जली जा रही थी। उन्होंने सोच रखा था जेल से निकलने पर वह गायत्री के चरणों में गिर पड़ेंगे। यह सत्य है कि उसकी गलती क्षमा योग्य नहीं है परंतु आत्मग्लानि से मरता दोषी, क्षमा याचना के अलावा और कर भी क्या सकता था ?

वह मन ही मन गायत्री को धन्यवाद भी दे रहा था " धन्य है गायत्री जिसने मेरे मन में पड़े पाप के बीज को अंकुरित होने से पूर्व ही कुचल दिया, वरना पता नहीं क्या अनर्थ हो जाता?? क्या मूल्य रहा जाता मेरी अब तक की मेहनत और कमाई का, यदि मुझे जीवन के आखिरी वक्त जेल में ही गुजारने पड़ते।

बहुत भागदौड़ कर आखिरकार उसने गायत्री और उनके पति दोनों को जेल से छुड़वाया। सेठ जी की पत्नी भी अपने बच्चों को लेकर वापस आ गई थी। सेठ जी की हिम्मत नहीं हो पाती थी पत्नी और बच्चों से आंखें मिलाने की। चुपचाप कमरे में बंद पड़े रहते, उनकी पत्नी भी उनसे बात करने नहीं जाती। सेठ जी के मन का बोझ दिनों दिन बढ़ता जा रहा था।

एक दिन उनकी पत्नी से रहा नहीं गया। उनके पास जाकर चिल्लाने लगी ।

"जब मन में पाप आया था तब सोचा नहीं गया, इतने ही पवित्र आत्मा होते तो ऐसा पाप कभी मन में ना आता । बेचारी गायत्री पर क्या गुजरती संकट में भी उसकी मजबूरी पर आंख गड़ाए बैठे थे..। "

होगी, उसका तो बस यही दोष है कि इस विपत्ति की घड़ी में भी परिवार के लिए संघर्ष कर रही है। एक वह है देवी और एक तुम राक्षस!! इस उनकी आँखों में आँसू आ गए। सेठ जी भी आत्मग्लानि से मरे जा रहे थे। उनकी भी आंखें भर आई।

" हे भगवान...! कैसे मेरे मन में ये घृणित विचार आए होंगे, मुझे तो नरक में भी जगह नहीं मिलेगी वह जड़ होकर लेटे रहे और छत की ओर चुपचाप देखते रहे।

पत्नी का मन थोड़ा शांत हुआ। वह इस पल अपने पति की मनः स्थिति में झांक सकती थी, उनका हृदय पश्चाताप से भरकर बैठा जा रहा था।

"अब ऐसे पड़े रहने से कुछ नहीं होगा, चलो गायत्री के पैरों में गिर कर माफी मांग लो उसने तुम्हारा सर फोड़कर तुम्हें अक्षम्य अपराध करने से रोका है तुम्हारे ऊपर तो उसका वैसे भी अहसान है ...तुम्हें आत्मग्लानि में देखे तो शायद उसका भी मन हल्का हा...। "—पत्नी ने कहा। इसपर सेठ जी ने भी सहमति जताई।

शाम को दोनों गायत्री के घर पहुंचे। सेठ जी सर झुकाए चौखट पर ही बैठ गए, पत्नी अंदर गई। गायत्री जैसे ही उनके सामने आई ..उनकी पत्नी का सर अनायास ही उनके पैरों पर टिक गया.. आंखों से आंसू की धार बह निकली। गायत्री उन्हें देखती रही..शरीर में जैसे लग रहा था कोई क्रिया प्रतिक्रिया बची ना हो ..सोचा जैसी अभागिन मैं हूँ वैसी ये भी तो है..इनके पति ने .एक साथ दो विश्वासों का हनन किया है . इनके हृदय की पीड़ा भी तो मुझ जैसी ही होगी..एक स्त्री अपने पति में देवता का रूप देखती है ..जब वह देवता ही छल करे तो आराधक पर क्या बीतेगी..?? गायत्री ने उन्हें उठाया और गले लगकर फूट—फूट कर रोने लगी।

"थाना पुलिस के नाम से काँप उठती थी दीदी. .! मुझे जेल भी जाना होगा,सपने में भी नहीं सोचा था .. ना जाने मैंने पिछले जन्म में कौन सा पाप किया था जिसकी सजा आज भी भोग रही ..।" सेठ जी की पत्नी का चेहरा गायत्री की गर्दन से टिका था ,आँसू रुक नहीं रहे थे । उन्हें ऐसा लग रहा था मानों वह खुद से लिपट कर खुद की व्यथा कह रही हो .. वह दुखों के अथाह सागर में डूब रही हो , और बाहर निकालने वाला दूर दूर तक नज़र नहीं आ रहा था। दोनों थोड़ी देर तक इसी मुद्रा में आंखें बंद किए खड़े रहे गायत्री को भी ऐसा लग रहा था मानों वर्षों बाद किसी अपने के सीने से लगी हो और किसी अपने ने उसके सर पर हाथ फेरा हो।

सेठ जी भी अंदर आ चुके थे ....गायत्री से आँखें मिलाने की हिम्मत नहीं थी...शरीर मानों बर्फ की तरह जम सा गया था। गायत्री के पैरों पर गिर पड़े और फूट—फूट कर रोने लगे।

"मुझमें तो माफी माँगने की भी हिम्मत नहीं बची है। गायत्री ..किस मुँह से माफी माँगू !! ग्लानि भीतर ही भीतर मुझे खाये जा रही है " सेठ जी असहाय याचक प्रतीत हो रहे थे।

गायत्री पीछे हटते हुए बोली—" माफ़ करने या दंड देने की शक्ति तो ईश्वर ने मेरे जन्म के साथ ही छिन ली थी सेठ जी ...!! माफी भी वही दे सकता जो सामर्थ्यवान हो....। मुझ जैसी असहाय के हिस्से तो और ना जाने कितने दंड ईश्वर ने तय कर रखे हैं . ।"

"मैं पापी हूँ गायत्री "—सेठ जी

"आप धन के मद में चूर एक मिथ्या अहंकारी थे सेठ जी .जो एक स्त्री के स्वाभिमान की भी

कीमत लगाना चाह रहे थे ।—गायत्री ।

"सच कहती हो गायत्री उस दिन जब तुम एडवांस के लिए मेरे पास आई थी, मेरे पास धन खर्च करने के दो विकल्प थे ..एक मुझे मानवता के रास्ते आत्मसंतुष्टि प्रदान करता तो दूसरा विचारों की अपवित्रता और जीवन भर के लिए आत्मग्लानि फिर भी मैंने दूसरा रास्ता चुना क्योंकि मैं धन के मद में चूर एक मिथ्या अहंकारी ही था।"—सेठ जी सर पकड़ कर जमीन में बैठे रहे।

"धन के सदुपयोग के भी अवसर भगवान हमें कभी कभी ही देता है इस अवसर का उपयोग इस तरह ना करें कि माँ लक्ष्मी भी अपमानित महसूस करे। वैसे उस दिन को लेकर आपके अंदर आत्मग्लानि है यही मेरे लिए बहुत है, और हाँ हम दोनों को जेल से छुड़वाने में जो खर्च आपने किया है ,बता दीजिएगा पिताजी से पैसे मँगवाए हैं आपको वापस कर दूँगी।" गायत्री की आँखों में पहले सी चमक थी।

सेठ जी निःशब्द थे।

पत्नी लौटने को तैयार हुई तो गायत्री ने रोक लिया, हाथ पकड़ कर कमरे में ले गयी और कहा—"पहली बार घर पर आई हो दीदी, कम से कम चाय तो पीना ही पड़ेगा ...।"

कोरोना

बीरेन्द्र कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोरोना आया कोरोना आया,
जग में नयी एक विपदा लाया।
मानो अपना रंग जमाया,
कोरोना आया, कोरोना आया।

मानव को, घर में बंद कराया,
रोजगार को भी, ठप कराया।
इसकी विभीषिका को, और कैसे,
बखान करें हम,
इसने देवी–देवता, जीजस, अल्लाह को भी,
दरवाजे के अंदर रहने का फरमान सुनाया
कोरोना आया, कोरोना आया।

किसी ने माना, कोरोना माता
किसी ने कहा, कोरोना बाबा,
किसी ने बताया, मानव के कर्मों का फल,
कोरोना आया, कोरोना आया।

किसी ने गो कोरोना, गो कोरोना, का मंत्र सुनाया,
तो किसी ने हनुमान पाठ का संकल्प बताया,
किसी ने कोरोनिल के उपयोग का रामबाण सुझाया,
फिर भी कोराना ने भारत में, विनाश फैलाया,
कोरोना आया, कोरोना आया।

डॉक्टर वैज्ञानिक ने, उपचार सुझाया,
सदैव हाथ धोते रहने, तथा सैनेटाईजर के,
उपयोग का काम बताया।
कोरोना आया, कोरोना आया।

हाथ नहीं मिलाने, गले नहीं लगाने,
दो गज दूरी को अपनाने,
का नियम बताया,
टीका लेना ही, मात्र सुपथ दिखलाया।
कोरोना आया, कोरोना आया।

दो कविताएँ

गोपाल कुमार
लेखापरीक्षक

"तुम नारी सबसे शक्तिशाली"

प्यारी हो, दुलारी हो।
तुम नारी सबसे शक्तिशाली हो।।

सुंदरता की पहचान तुम्हीं से है।
इस सर पे चाँद तुम्हीं से है।।

हम सब में संस्कार तुम्हीं से है।
इस जग में इंसान तुम्हीं से है।।

हँस दो तो, ये चाँद भी मुस्कुराये।
ये दिल हँसे, सारा जग खिलखिलाए।।

"मैं राधेय"

जीत मेरी होगी नहीं, ये मुझको भी पता है।
हार के भी जीतूगाँ मैं, क्या तुझको ये पता है।।

जब पीड़ा थी, जब दुःख था,
किसी ने न पकड़ा मेरा हाथ।
दुष्ट ही हो, पर कैसे छोड़ दूँ, उसका साथ।।

सूत पुत्र कहके सभी ने मेरा बहुत अपमान किया।
इंद्र देव ने तब भी आकर फिर क्यों वो दान लिया।।

इंसानों के इस युद्ध में भगवान को तुमने उतारा है।
छल किया है तुमने, इसे कहाँ स्वीकारा है।।

हरा दो मुझे, पर जीत कभी न पाओगे।
हार कर भी जीतूंगा मैं, तुम जीत कर भी हार जाओगे।।

शेयर बाजार का आरंभ– वर्तमान संदर्भ के साथ

सतीश चन्द्र
सहा० लेखापरीक्षा अधिकारी

शेयर बाजार की शुरुआत – हमारे देश में संवेदी सूचकांक (सेंसेक्स) का आधार वर्ष 1978 – 79 है, बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज के संवेदी सूचकांक 'सेंसेक्स' का सफर एक अप्रैल, 1979 से शुरू हुआ था, उसकी यह यात्रा 100 अंकों से शुरू हुई थी। ऐसे तो 9 जुलाई 1875 को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बी0एस0ई0)की स्थापना हुई थी जो ऐशिया का पहला और सबसे तेज स्टॉक एक्सचेंज था। बी0एस0ई0की सभी सूचीबद्ध कंपनियों के बाजार पूंजीकरण के लिहाज से दुनिया के 10 बड़े एक्सचेंज में शामिल हो गया है। शेयर बाजार ने 1986 में सेंसेक्स की रचना की जिसमें 30 कंपनियों को समाहित किया गया जिसकी गणना मार्केट कैपिटलाइजेशन वेटेज मेथोडोलॉजी के आधार पर किया गया था। धीरे–धीरे आर्थिक प्रगति और समय के साथ सेंसेक्स भी अपने आधार वर्ष से नई ऊँचाईयों को छूते हुए बहुत आगे निकल गया जो वर्तमान में सेंसेक्स 56000 के स्तर को भी पार किया था। प्रायः यह कहा जाता है कि शेयर बाजार देश के आर्थिक स्वास्थ्य को ठीक रखने और उसकी प्रगति बनाये रखने में प्रमुख भूमिका निभाता है। वर्तमान में 5000 से अधिक कम्पनियाँ बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध है।

सेंसेक्स के आधार पर दिल्ली में निफ्टी नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया जो नेशनल और फिफ्टी शब्दों को मिला कर निफ्टी की शुरुआत 1 अप्रैल 1996 में 50 शेयर को समाहित कर किया गया। सेंसेक्स के आरंभ होने के बाद इसमें काफी उतार–चढ़ाव देखे गए जिसमें तीन प्रमुख हैं।

1. 1992 में हर्षद मेहता का घोटाला। हर्षद मेहता बैंक से 15 दिन का लोन लेता था और उसे स्टॉक मार्केट में लगा देता था, बाजार में लगाकर शेयर का हेर–फेर करता था। साथ ही 15 दिन के भीतर वो बैंक को मुनाफे के साथ पैसा लौटा देता था।

2. 2008–09 की वित्तीय गिरावट। लीमैन ब्रदर्स घोटाला अमेरिकी चौथी बड़ी इन्वेस्टमेंट बैंक के दिवालिया घोषित होने पर दुनिया में आर्थिक मंदी आने की आशंका में भारतीय शेयर बाजार में भारी गिरावट का सिलसिला शुरू हुआ था।

3. 2020 में कोरोना वैश्विक महामारी के कारण भारी गिरावट दर्ज की गई थी जो महामारी कम होने पर बहुत तेज गति से आगे बढ़ा।

शेयर बाजार में निवेश आरम्भ से ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। इसके लिए अच्छे शेयर का चुनाव कम्पनी के प्रबंधन, वित्तीय स्थिति तूलन पत्र, लाभ और हानि लेखा, आय, व्यवसाय की निरंतरता एवं शेयर मूल्य इत्यादि विश्लेषण कर लम्बी अवधि के लिए

निवेशित रहना श्रेयस्कर होता है। वर्तमान समय में शेयर बाजार व्यवसाय के साथ–साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बहुत बड़ी नियोक्ता भी मानी जाती है।

शेयर में निवेश सेबी द्वारा पंजीकृत ब्रोकर के साथ ही करना चाहिए। निवेश किसी के कहने सुनने पर नहीं करना चाहिए। अंग्रजी में कहा गया है (Buy right & sit tight)। अच्छे शेयर में निवेश करने में कभी बुरा वक्त नहीं होता है।

अनजान या खराब शेयर खरीदने से बेहतर है लॉटरी टिकट लेना। कम मूल्य देख कर निवेश नहीं करना चाहिए, जितनी जोखिम उठाने की क्षमता हो उतनी शेयर की खरीदारी करनी चाहिए। कहा गया है पौधे, बच्चे और शेयर तीनों को बढ़ने में वक्त लगता है।

निवेश के लिए बैंक, वित्तीय, बीमा, तकनीकी, फार्मा, निर्माण, उपभोक्ता सामग्रियों, वाहन इत्यादि मिश्रित क्षेत्र में होना चाहिए साथ ही समय–समय पर अपने पोर्टफोलियों का अवलोकन भी करना चाहिए।

अक्सर इस बाजार में लोग केवल खरीदारी की सलाह देते हैं। निकलने/बेचने की सलाह नहीं देते हें। जबकि ऐसा नहीं होना चाहिये, निवेशित शेयरों का सही भाव आने पर विक्रय यानी निकासी भी करनी चाहिए।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि सेंसेक्स हो या इंसान अन्ततः सभी को ऊपर जाना ही है।

ऑनलाइन ऑडिट

अमृता सिंह
वरीय लेखापरीक्षक

ध्यान दीजिये जनाब, करियेगा जरा गौर
आ गया है अब ऑनलाइन ऑडिट का दौर।

कागज, पन्ने, पेन्सिल, पेन का खर्चा हो गया कम,
कम्प्यूटर की स्क्रीन पर लगा दिया है अब दम।

नयी–नयी शुरूआत है, नया–नया है काम
थोड़ा मुश्किल दौर है पर अच्छा होगा अंजाम।

सुबह ऑडिट, शाम ऑडिट, करना है अभ्यास
अभ्यास ही परिपक्व बनावे, इससे मिलता विश्वास।

ऑडिट–ऑडिट करते रहिये, ऑडिट कार्यालय की जान
इस ऑडिट से अस्तित्व बने, बढ़े मान – सम्मान।

ऑनलाइन से नहीं घबराना है, ऑडिट का है मान
इसी ऑडिट से घर चले, मिले रोटी, कपड़ा और मकान।

अकेलेपन और एकांत में है अंतर

बीरेन्द्र कुमार
एम . टी . एस

अकेलेपन और एकांत में बहुत अन्तर है। दोनों एक जैसे लगते हैं पर ऐसा है नहीं। अकेलापन और एकांत दोनों में हम अकेले ही तो होते हैं परन्तु अन्तर क्या है दोनों में? भारी अन्तर है दोनों के बीच। अकेलापन तब होता है जब हम अपने अकेले रहने से व्यथित हैं, दुःखी होते हैं, परेशान होते हैं। हमारा मन उस अकेलेपन से भागने लगता है और अपनों की भीड़ में समा जाना चाहता है। अकेलेपन में दुःखद और कष्टप्रद अनुभव होता है। एकांत वह है जहाँ हम अकेले होने में प्रसन्न एवं खुश होते हैं। एकांत हमें शांति एवं सुकून प्रदान करता है। एकांत में हमारे जीवन का सुमधुर संगीत फूटता है।

अकेलापन एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की सहज घटना है। सामान्य व्यक्ति अकेलेपन से घबराता है और उससे बचना चाहता है और इससे बचने के लिए वह भीड़ की ओर भागता है उसके लिए अकेलापन किसी दंड से कम नहीं है क्योंकि कभी भी अकेलेपन के इस अनुभव को बर्दास्त नहीं कर पाता है। इसके विपरीत योगी को कभी भी अकेलेपन का एहसास नहीं होता है बल्कि उसे तो भीड़ से समस्या होती है क्योंकि योगी एकांत में ही अपनी अंतर्यात्रा की शुरूआत करता है उसकी सभी आंतरिक विभूतियाँ उसे एकांत में ही उपलब्ध होती है। सामान्य रूप से अकेलेपन का एहसास हर कोई अपने जीवन में करता है परन्तु लम्बी अवधि तक इसको अनुभव करना अनगिनत समस्याओं को जन्म देता है। अधिक समय तक अकेलेपन का अनुभव हमारे मन–मस्तिष्क पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। अकेलापन तनाव, चिंता, व्यग्रता और अवसाद का कारण बनता है। ये मनोविकार हमारे समग्र व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं और हमारा व्यक्तित्व कुंठाग्रस्त हो जाता है। इससे व्यक्तित्व का विकास भी अवरूद्ध हो जाता है। इस अकेलेपन को महसूस करने की कई वजहें होती है जैसे– पारिवारिक परेशानी, सामाजिक समस्या, व्यक्तिगत उलझन, अपनों से दूर होना या उनकी उपेक्षा, भीड़ में स्वयं को अकेलापन आदि। कई बार ता ऐसा होता है कि हम भीड़ में भी स्वयं को अकेला पाते है। भीड़ में कोई भी अपना नहीं लगता है और हम किसी कोने में खड़े रहने के लिए विवश हो जाते हैं।

भीड़ में अकेलापन इसलिए होता है क्योंकि हम लोगों से अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाते हैं और हम सामंजस्य नहीं रख पाते हैं। जब हम औरों से सामंजस्य एवं सहज सम्बन्ध बनाने में सक्षम हो जाते हैं तो फिर भीड़ में अकेलापन महसूस नहीं करते हैं। अकेलेपन का सबसे बड़ा कारण है अपने मन और भावनाओं पर नियंत्रण का न हो पाना। हमारी उद्वेलित भावनाओं का परिणाम अकेलापन होता है। अपनों की भीड़ में हम स्वयं को अकेला खड़ा पाते हैं। लगता है कोई अपना नहीं है। ऐसी स्थिति यदि लम्बे समय तक रहती है तो हम अवसाद से घिर जाते हैं और हम गंभीर मानसिक रोगों की ओर अग्रसर होने लगते हैं।

अकेलापन विशुद्ध रूप से मानसिक एवं भावनात्मक समस्या है। हमें जब लगता है कि किसी के बिना हम अधूरे हैं किसी के बिना हमारा जीवन खाली लगने लगे तो हम अकेलापन महसूस करते हैं। अकेलापन अर्थात् अधूरापन एवं खालीपन अर्थात अपने जीवन में इकट्ठी भीड़ को खो देने का एहसास, अपनों से दूर होने का एहसास।

अकेला हमें भावनात्मक रूप से अतशप्त करता है और हम इस अकेलेपन को दूर करने के लिए तरह–तरह की तरकीबें खोजते हैं। संगीत सुनते हैं किसी से मोबाइल से बात करने लगते है वाट्सएप, फेसबुक आदि में व्यस्त हो जाते हैं। एसा नहीं होने से हम अकेलेपन से घबराने लगते हैं और ये तमाम उपाय उस घबराहट को दूर करने के लिए करते हैं। जब हम भावनात्मक रूप से संतुष्ट एवं स्थिर होते हैं तो कभी भी अकेलेपन से हमारा सामना नहीं होता है।

जब हम अपने किसी मनपसंद काम में व्यस्त हो जाते हैं तब हमें कभी अकेलापन अनुभव नहीं होता है जिस काम में हमारा मन नहीं लगता है वह बोझिल हो जाता है और हम वहाँ पर स्वयं को अकेला खड़ा पाते हैं लगता है। कि इसे छोड़कर कहीं चले जाएँ या किसी से बात कर लें या फिर कुछ और कर लें। अपने मन को शांत एवं भावनाओं को स्थिर करना सीख लेता है उसे कभी भी अकेलेपन का एहसास नहीं होता है। एकांत में वह अपने जीवन के उद्देश्य एवं अपने लक्ष्य से परिचित होने लगता है। वह अपने जीवन का दिव्य संगीत इसी एकांत में सुन पाता है।

अकेलेपन को एकांत में परिवर्तित किया जा सकता है। जब मन को शांत एवं भावना को स्थिर किया जाता है तो अकेलेपन की तन्हाई एकांत के सरगम में बदलकर एक दिव्य संगीत को सृजित करती है और संगीत के इस स्वर में अकेलापन बुलबुले के समान विलीन हो जाता है। फिर कहीं भी किसी को खोजने की जरूरत नहीं होती है और न कहीं जाने की आवश्यकता पड़ती है न किसी को बुलाने की और न किसी में अपनेपन की तलाश रहती है। एकांत अनगिनत रहस्यों मे सिमटा हुआ जीवन परत–दर–परत खुलने लगता है और अतीत के विविध आयाम प्रकट होने लगते हैं।

अकेलेपन में जिसे सोचकर ही भय उत्पन्न होने लगता है और उस भय से भागने का मन करता है वही अकेलापन जब एकांत में रूपान्तरित हो जाए तो जीवन की वास्तविकता से हमारा परिचय होता है कि हमारे अंदर कितनी अद्भुत एवं आश्चर्यजनक विभूतियाँ भरी पड़ी हैं, कितने रहस्य समाये हुए हैं, कितनी परते पड़ी हुई हैं, वे सब एकांत में धीरे–धीरे प्रकट होने लगते हैं। एकांत में ही जीवन की गहराई में प्रवेश पाने का प्रारंभ किया जा सकता है। जिस प्रकार समुद्र में अपार लहरों की जलधारा बनी रहती है और इन लहरों को देखकर कल्पना भी नहीं की जा कती है कि समुद्र में बहुमूल्य रत्नों का खादान होगा। वेशकीमती चीजें होगी परन्तु जो इन लहरों को चीरकर समुद्र के अंदर प्रवेश करता है उसे यह सब हस्तगत होता है ठीक उसी प्रकार बाहरी कोलाहल से दूर एकांत में प्रवेश करने पर वास्तविकता से परदा उठता है और इसके रहस्य का पता चलता है। यह सब एकांत में ही सम्भव है।

इसलिए अकेलेपन से दूर जाने की जरूरत नहीं है बल्कि आवश्यकता है कि इसे सहजता से एकांत में परिवर्तित कर दिया जाय। एकांत में जीवन का सौंदर्य मुखर हो उठता है जैसा कि एक कवि ने लिखा है–

नकुल–मुकुल पर विलास

कलि–कलि पर ह्रास

तश्ण–तश्ण पर तरल लास

अधरों पर जीवन मुस्कुराय

स्वगत जीवन! साज

श्रीसुख से सजे साज

बारिश की बूंदे

विजय कुमार ठाकुर
लेखापरीक्षक

कभी हँसाती, कभी रूलाती,
ये बारिश की बूँदें।
घनघोर घटा छायी है नभ पर,
काले–काले बादल बनकर।
आस जगाती है मन को,
सुहाना मौसम बन जाता है,
चिलचिलाती गरमी को दूर भगाती,
जब आती है धरती पर ये बारिश की बूँदें।
किसानों के मन में उम्मीदों के,
नए दीप जलाती है।
खेतों में छा जाती है हरियाली,
खूब भाती है आँखों को ये खुशहाली।

बच्चों के मन में खुशियाँ लाती,
जब लुफ्त उठाते हैं बारिश के।
धरा पर जब बहता पानी,
खूब खेते नाव कागज के
जब होती है अतिवृष्टि
विकराल रूप में आती है बाढ़।
अनगिनत जिन्दगियाँ और घर
तबाह हो जाते हर साल
मच जाता है हाहाकार चारों ओर,
जुट जाती है सरकार बचाव और राहत में।
अस्त व्यस्त हो जाता जीवन,
कभी हँसाती, कभी रूलाती ये बारिश की बूँदें।

ऑडिट कार्य

पी० सी० सिन्हा

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

ऑडिट करने जब निकलते हैं,
ग्राम–नगर सब घूम जाते हैं,
दफ्तर–दफ्तर का दौड़ लगाते है,
उनके कार्यों में अंतर पाते हैं,
नियम भी एक से कहाँ होते हैं,
अद्धतन उन्हें भी हम रखवाते हैं।

यूनिटवालों से जब मिलते हैं,
हिल मिल खूब बातें करते हैं,
बातों से ही मंशा भांप लेते हैं,
पेंसिल से चिह्न जब लगाते हैं,
और गलती प्रकाश में लाते हैं,
तो ऑडिट से वे तिलमिलाते हैं,

दूरियाँ ऑडिटर से बढ़ाते हैं,
बुलाने पर भी वे मटियाते हैं,
सब कागज फाइल छिपाते हैं,
तब अनुभव अपना लगाते हैं,
उनसे फाइल हम निकलवाते हैं,
तब जाकर ऑडिट कर पाते हैं,

डिस्कशन पर साहब बुलाते हैं
पहले देख हमें वे मुस्कुराते हैं
गर्मजोशी से वे हाथ मिलाते हैं
चाय–कॉफी के लिए फरमाते हैं
आपत्तियों को जब वे पढ़ते हैं
चेहरे पर तनाव झलकते हैं

मन में ऑडिट पर झुंझलाते हैं
जवाब देने से भी जी चुराते हैं
गलत स्टाफ को वे ठहराते हैं
गोलमोल जवाब देते हैं
प्रतिकूल हालात को हम झेलते हैं
तब ऑडिट सम्पन्न कर पाते हैं।।

टोक्यो ओलंपिक में भारत का शानदार प्रदर्शन

योगेश कुमार
वरीय लेखापरीक्षक

टोक्यो ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम का दो दशक बाद पदक जितने पर बहुत–बहुत बधाई और शुभकामनायें। यह जीत एक नई इबादत लिख रही है, नया इतिहास बना रहा है, नई राह खुल रही है। भारतीय हॉकी का स्वर्णिम अतीत अब इतिहास के पन्नों की बात नहीं रह गई।

भारतीय हॉकी जीवित हैः–

भारतीय हॉकी जीवित है, सिर्फ मैदान में नही बल्कि करोड़ों भारतीयों के दिल में, दिल की हर धड़कन में। हमारी पीढ़ी ने भारतीय हॉकी का जलवा नहीं देखा है, उसे सिर्फ पढ़ा है या सुना है। नई पीढ़ी ने इस जीत के बाद महसूस किया होगा की क्यों हॉकी हमारा राष्ट्रीय खेल बना। इस जीत के बाद, मैं यह सोच रोमांचित हो जाता हूँ कि कैसा लगता होगा, जब तीन दशक तक भारतीय हॉकी टीम अपराजित रही होगी? वह भी तब जब हम ओलंपिक में एक अदद मेडल को तरसते थे। उस दौर में हमारी हॉकी टीम ने 8 स्वर्ण पदक सहित कुल 11 पदक हासिल किया था।

पदक वीर को सलामः–

यह सब तो चलता रहेगा, फिलहाल हम बात करतें हैं, भारतीय हॉकी टीम के जीत की। पदक वीर भारतीय हॉकी टीम की औसत आयु 25 साल रही है। यह ओलंपिक में भाग ले रही टीमों में सबसे फिट टीम रही है। ओलंपिक शुरू होने के पहले ही मैंने कहा था, इस बार हमारी टीम कुछ कर गुजरने की इच्छा शक्ति के साथ ओलंपिक में भाग लेने गई है। आपसी तालमेल, सामंजस्य, एकता, मानसिक दृढ़ता, अनुभव, अनुशासन के साथ जीत के जज्बा की वजह से टीम इस मुकाम तक पहुंची है। इस जीत में मुख्य प्रशिक्षक ग्राहम रीड, प्रशिक्षक शिवेंद्र सिंह जैसे रणनीतिकार के साथ एक पेशेवर स्पोर्ट टीम की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। भारत की दिवार कहे जाने वाले अनुभवी गोलकीपर श्रीजेश और कप्तान मनप्रीत के नेतृत्व में हरमनप्रीत, रूपेंद्रपाल, अमित, विवेक, मनदीप, दिलप्रीत और ललित समेत सभी खिलाडियों ने शानदार खेल का प्रदर्शन कर जो इतिहास रचा है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय वह कम है।

महिला हॉकी का जलवाः–

पुरुषों के कंधा से कंधा मिला कर महिला हॉकी टीम ने अपने जुझारूपन और दिलेरी से सेमीफाईनल में पहुंच कर इतिहास रच डाला है। भले हीं रोमांचक मुकाबले में ब्रिटेन से 4–3 से हार भारतीय महिला टीम का ओलंपिक में पहला पदक जीतने का सपना टूट गया हो, लेकिन झाँसी की रानी की तरह लड़ कर भारतीय महिला टीम ने लोगों का दिल जीत लिया है। इसके लिए मुख्य प्रशिक्षक शोर्ड मारिन, कप्तान रानी रामपाल सहित पूरी भारतीय महिला हॉकी टीम बधाई के पात्र है।

भारतीय हॉकी और ध्यानचंदः–

आज हमें भारतीय हॉकी के भविष्य की बातें करनी चाहिए। लेकिन इतिहास से ही तो हम सीखते हैं, सबक लेते हैं। कहते हैं जो देश अपने इतिहास का इज्जत नहीं करता उसका कोई भविष्य नहीं होता। शायद यही हुआ है, हमारे हॉकी के साथ। ध्यानचंद सहित हमारे अतीत के योद्धा ने पूरे विश्व में भारतीय हॉकी और भारतीय तिरंगा का परचम लहराया। हमें झूमने गाने का मौका दिया। लेकिन हमने इन्हें क्या दिया? भारत रत्न के असली हकदार मेजर ध्यानचंद ने हिटलर के जनरल बनने का ऑफर देशभक्ति के कारण ठुकरा

दिया। उन्हीं ध्यानचंद का देहांत एम्स के जनरल वार्ड में बदहाली के साथ हुआ। ढ़ेर सारी किस्से–कहानियाँ हैं, हॉकी की बदहाली की, हमारे बदहाल हीरो की।

थोड़ा है; थोड़े की जरूरत है:–

टोक्यो ओलंपिक ने कई मायनों में अच्छे बदलाव के संकेत दिये हैं। नई पीढ़ी के लोगों ने देखा की क्रिकेट के अलावा और भी खेल है, जिसमें भारत कुछ कर सकता है। पुरे देश ने मिडिया, सोशल मिडिया में ओलंपिक में भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन को जिस तरह से देखा है, सराहा है; यह उत्साह जनक है। सबसे बड़ी बात है कि खेल में घटिया राजनीति की जगह खेल चुनाव का एक मुद्दा बन गया है। यह शुभ संकेत है। पंजाब हरियाणा की जगह एक गरीब राज्य उड़ीसा का भारतीय हॉकी का प्रयोजक बनना। पुरे राज्य में विशेष कर सुन्दरगढ़ जिला के हर प्रखंड में हॉकी मैदान/एस्ट्रो टर्फ मैदान बनवाना और परिणाम स्वरुप चुनाव में जीतना यह अन्य राज्यों को भी प्रेरित करेगी। जिस तरह से देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित हर राज्य के मुख्यमंत्री ओलंपिक खिलाड़ियों को सम्मानित कर रहें हैं, उन्हें प्रोत्साहन राशि दे रहें है, यह स्वागत योग्य कदम हैं। इसके दूरगामी परिणाम निकलेंगे। भारत सरकार ने खेल रत्न का नाम बदल कर'ध्यानचंद खेल रत्न' कर अच्छी पहल की है। अब जरुरत है, उन्हें भारत रत्न देने की जिसके वे असली हक़दार रहें हैं। जिस तरीके से इस बार भारतीय हॉकी/ओलंपिक खेलों को हर भारतीय, मीडिया, सोशल मीडिया, सरकार, राजनीतिज्ञ का साथ मिला है, आगे भी साथ मिलता रहा और हॉकी इंडिया इसी तरह प्रोफेशनल तरीके से काम करती रहे तो भारतीय हॉकी के सितारे हमें तिरंगा लहराने का मौका बार–बार देते रहेंगें।

ओलंपिक खेलों में हॉकी टीम की उपलब्धियाँ

स्वर्ण	1928	एम्स्टर्डैम (नीदरलैंड्स)
स्वर्ण	1932	लॉस एंजेलेस (संयुक्त राज्य अमेरिका)
स्वर्ण	1936	बर्लिन (जर्मनी)
स्वर्ण	1948	लंदन (यूनाइटेड किंगडम)
स्वर्ण	1952	हेलसिंकी (फिनलैंड)
स्वर्ण	1956	मेलबर्न (ऑस्ट्रेलिया)
रजत	1960	रोम (इटली)
स्वर्ण	1964	टोक्यो (जापान)
कांस्य	1968	मेक्सिको सिटी (मेक्सिको)
कांस्य	1972	म्यूनिख (जर्मनी)
स्वर्ण	1980	मॉस्को (सोवियत रूस)
कांस्य	2020	टोक्यो (जापान)

जल थल और स्वास्थ्य के लिए घातक प्लास्टिक

भुवन भास्कर
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

शायद ही कोई नदी या तालाब हो, जिसके किनारे प्लास्टिक का कचरा नहीं दिखता हो। शहर से लेकर गाँव तक की छोटी–बड़ी सभी नालियों में प्लास्टिक का कचरा भरा हुआ दिखता है। इसका कारण है प्लास्टिक का हमारे जीवन में रच बस जाना। किराना की दुकान हो या सब्जी की, दूध का पैकेट हो या दवा की बोतलें, पानी पीने का ग्लास हो या चाय की प्याली, सजाने का फूलदान हो या खाने की थाली– प्लास्टिक का प्रयोग हर जगह दिखाई दे रहा है। प्लास्टिक के उपयोग क्षेत्र की सूची बहुत लम्बी है और हम इसे सर्वव्यापी कह सकते हैं। इसके आश्चर्यजनक ढंग से सर्वव्यापी होने का प्रमुख कारण इसकी सुलभ उपलब्धता, सुविधाजनक उपयोगिता और कम खर्चीला होना है। लेकिन सारे उपयोग के बावजूद इसमे दो बहुत बड़े ऐब हैं, पहला पर्यावरण से सम्बंधित है जो इसके अपशिष्ट के विघटन के आभाव से उत्पन्न है एवं इसका दूसरा ऐब है इसमें पाए जाने वाले रासायनिक तत्त्व इसके संसर्ग में आने पर भोजन अथवा पेय पदार्थों में रासायनिक बदलाव आ जाता है जो स्वस्थ्य के लिए नुकसानदायक है और जिसका काफी दूरगामी कुप्रभाव पड़ता है। इसके रासायनिक दुश्परिणाम से बहुत सारे पढ़े–लिखे लोग भी अवगत हैं, फिर भी वे इसका उपयोग धड़ल्ले से करते हैं, जो उनकी मजबूरी नहीं लापरवाही है।

बहुपयोगी मगर नुकसानदेह प्लास्टिक पॉलीमर की खोज सन 1835 ई. में हो गई थी, परन्तु सन 1909 ई. में बेल्जियम मूल के अमेरिकी वैज्ञानिक हेंड्रिक बेकलैंड द्वारा बेकेलाईट की खोज के बाद इसकी उपयोगिता बढ़ गई और प्लास्टिक युग की शुरुआत हो गई। हल्का, टिकाऊ और इच्छित आकार में ढल जाने वाले गुण के कारण इसका बहुआयामी उपयोग काफी तेजी से बढ़ा। लकड़ी, पत्ता, मिट्टी, कपड़ा, जूट, धातु, कांच, रुई आदि से तैयार की जाने वाली उपयोगी सामग्रियों का निर्माण प्लास्टिक से होने लगा। कागज, कपड़ा और जूट की थैलियों की जगह प्लास्टिक की थैलियों ने ले ली। कांच और मिट्टी की जगह प्लास्टिक की शीशी, बोतल, मर्तबान आदि बन गए। विभिन्न प्रकार के फर्नीचर, खिड़की–दरवाजे आदि लकड़ी के बदले प्लास्टिक के बनने लगे। यहाँ तक कि कपड़ा उद्योग में रुई और रेशम की जगह प्लास्टिक के नायलान, टेरीलीन आदि का उपयोग होने लगा। सूती कपड़ों की अपेक्षा सिंथेटिक कपड़ों का रख–रखाव आसान होने के कारण कपड़ा उद्योग में इसका धड़ल्ले से प्रयोग होने लगा। अब धीरे–धीरे लोगों को यह पता चल चुका है की प्लास्टिक के पात्रों में रखे भोज्य या पेय पदार्थ हों या सिंथेटिक कपड़े– इनका उपयोग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है, जानते हुए भी लोगों द्वारा प्लास्टिक का विभिन्न रूपों में प्रयोग किया जा रहा है। प्राचीन काल से भोजन परोसने के लिए पलाश, महुआ, साल, कटहल, केला आदि की पत्तियों से बने पत्तल का उपयोग होता रहा था। प्रकृति से जुड़े इन पदार्थों का उपयोग प्लास्टिक की तरह हानिकारक नहीं था। कुछ लोग आज भी पत्तल का ही उपयोग करना पसंद करते हैं। दक्षिण भारत और अन्य कई जगह आज भी केला के पत्ते पर भोजन परोसा जाता है, जिससे भोजन की शुद्धता बनी रहती है। पत्तल पर भोजन करना सामाजिक अर्थव्यवस्था का भी एक हिस्सा है। पत्तल उद्योग में लगे हजारों लोगों को इससे संबल प्राप्त होता है। पत्तल निर्माण के कार्य में ग्रामीण और आदिवासी परिवारों में पुरुषों के साथ–साथ महिलाएँ और बच्चे भी लगे रहते हैं। उन्हें पत्तियां तोड़ कर लाने, उनसे पत्तल बनाने और बने पत्तल को बाज़ार में जाकर बेचने का काम मिल जाता है।झारखण्ड और छत्तीसगढ़ जैसे आदिवासी बहुल क्षेत्रों में पत्तल का निर्माण एक बहुत बड़ी उपलब्धि और आदिवासी समाज की अर्थ–व्यवस्था को सुदृढ करने का प्रमुख साधन है। पत्तल के उपयोग का सबसे बड़ा लाभ प्लास्टिक की तुलना में स्वास्थ्य पर इसका सकारात्मक प्रभाव है। अपनी सोंच को थोड़ा मजबूत और संकल्पित कर लिया जाए तो प्लास्टिक के पत्तल आदि का उपयोग बंद करना कोई बड़ी बात नहीं है।

छोटे होटलों और ढाबों की संख्या हजारों नहीं, लाखों में है, जहाँ प्लास्टिक के कप और ग्लास का उपयोग बेरोक–टोक हो रहा है। कप, ग्लास, थाली, थैला आदि के रूप में प्लास्टिक का उपयोग नित्य बढ़ रहा है। शादी–प्रीतिभोज, पूजा–पाठ, जन्म–मरण जैसे आयोजनों में प्लास्टिक के कप, ग्लास और थाली का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है। उपयोग से पूर्व उन्हें धोया नहीं जाता, इससे इसमें सटा

रसायन सीधे पेट में चला जाता है। प्लास्टिक के इन पात्रों में भोजनादि, खास कर गरम पदार्थ रख देने से उसमें रासायनिक गंध और स्वाद का असर स्पष्ट रूप से आ जाता है। प्लास्टिक की थैलियों को रंगीन बनाने के लिए घातक रसायनों का उपयोग किया जाता है, इसलिए उन थैलियों में रखी खाद्य वस्तुएं उनके संसर्ग में आकर विषैली हो जाति हैं। ग्लास, कप, प्लेट इत्यादि के रूप में प्रयोग करने के बाद इसे फेंक दिया जाता है जो हवा में उड़ कर चारो तरफ फ़ैल जाता है और नालों इत्यादि में जा कर उन्हें जाम कर देता है जिससे उनमें पानी का बहाव बाधित होता है और जल जमाव की समस्या उत्पन्न होती है।

सार्वजनिक उपयोग की तरह प्लास्टिक के पुनः उपयोग की व्यवस्था भी एक गंभीर समस्या है। विघटन और पुनः उपयोग नहीं हो पाने के कारण कचरा के रूप में यह जिस तरह हमारी धरती और पर्यावरण को प्रभावित कर रहा है, यह आने वाले दिनों के लिए बहुत ही खतरनाक साबित होगा। आज यह एक विकराल समस्या का रूप ले चुका है। कुछ स्थानों पर इसके पुनः उपयोग की सुविधा है परन्तु इसके रीसाईकलींग के दौरान जो गैसें निकलती हैं वो स्वास्थ्य के लिए अति घातक हैं। प्लास्टिक जल प्रदुंषण का भी प्रमुख कारण है और इनके कचरे से नदी नाले भरे रहते हैं। प्लास्टिक के कचरे के कारण नदियों और तालाबों का जल अशुद्ध हो गया है। यह स्वयं विघटित नहीं होता एवं अपने आस–पास के दूसरे कचरों को भी जमा कर लेता है। नालियों में गिरे–पड़े प्लास्टिक के कारण फैली गन्दगी को देख कर हम नदियों और तालाबों की तलहटी में प्लास्टिक के कारण फैली गन्दगी का सहज ही अनुमान लगा सकते हैं।

धरती पर प्रति वर्ष लाखों टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होने का अनुमान है। अकेले चीन में प्रतिवर्श 160 लाख टन से अधिक प्लास्टिक कचरा निकलता है। भारत में इसकी मात्रा 45 लाख टन प्रति वर्ष है। प्लास्टिक को पूर्ण रूप से विघटित होने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं और जैव विघटन नहीं होने के कारण प्लास्टिक के कचरे का हर तरफ अम्बार लगता जा रहा है जो पर्यावरण के लिए गंभीर समस्या बन चुका है और स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक होते जा रहा है। प्लास्टिक का कचरा नदियों और तालाबों में जमा हो जाने के कारण मछलिओं और अन्य जलीय जीवों का जीवन प्रभावित हो गया है। यही स्थिति समुद्र के किनारे और अन्दर रहने वाले जलीय जीवों का भी है। मछलियाँ और जलीय जीव ही नहीं, गायें एवं अन्य मवेशियां भी रास्ते में पड़ी प्लास्टिक की थैलियाँ खा लेती हैं। प्लास्टिक की ये थैलियाँ ऐसे मवेशियों के पेट में जमा हो जाती हैं जिससे जानवरों में कई प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं और ऐसे बीमार जानवरों के दूध या मांस का प्रयोग करने वालों पर भी इसका नुकसानदायक प्रभाव पड़ता है। पानी या मिट्टी में वर्षों तक रहने के बावजूद विघटित नहीं होने के कारण खेतों में भी प्लास्टिक का कचरा बढ़ गया है, जिससे न सिर्फ खेत की उर्वरता प्रभावित हो ही रही है बल्कि चारो तरफ गन्दगी का साम्राज्य सा हो गया है जो पर्यावरण के लिए अति घातक और स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक है।

प्लास्टिक के खतरों से अवगत होने के बावजूद कुछ लोग इसके पक्ष में तर्क देते हैं। इनके द्वारा कहा जाता है कि प्लास्टिक के उपयोग से वृक्षों की कटाई कम होती है। लेकिन ऐसी बातें क्षणिक आवेशित हैं और दूरगामी प्रभावों के बारे में सोंचने वाले प्लास्टिक के पक्ष में अपनी राय नहीं दे सकते। पेड़ लगाकर उसकी कटाई से उत्पन्न स्थिति से निपटा जा सकता है, मगर प्लास्टिक के उपयोग से उत्पन्न समस्या का समाधान बिल्कुल कठिन है। प्लास्टिक के बहु– उपयोग का दुष्परिणाम ही है कि धरती बंजर बनती जा रही है और नदियाँ प्रदूषित होती जा रही हैं। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि प्लास्टिक के उपयोग का सिलसिला यदि इसी तरह जारी रहा तो बंजर धरती का क्षेत्रफल बढ़ता जाएगा और जल निकासी भी एक वृहत् समस्या का रूप ले लेगी। प्लास्टिक से भरी इस धरती पर रहने वालों के स्वास्थ्य की स्थिति की परिकल्पना सहज ही की जा सकती है।

संकल्प हमें लेना होगा,

प्लास्टिक को दूर भगाने का।

तभी होगा सही सपना पूरा,

पर्यावरण को बचाने का।

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2021 की झलकियाँ

स्वतंत्रता दिवस 2021 पर झंडोत्तोलन करते हुए
श्री रामावतार शर्मा, महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

स्वतंत्रता दिवस 2021 पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए श्री रामावतार शर्मा, महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

श्री राकेश मोहन, अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय द्वारा पटना में महालेखाकार भवन के प्रांगण में वृक्षारोपण।

'माँ की याद'

रवि प्रकाश

लेखापरीक्षक

आज यूहीं बैठे–बैठे आँखें भर आई हैं,
कहीं से माँ की याद दिल को छूने चली आई है।
वो आँचल से उसका मुँह पोंछना और भागकर गोद में उठा लेना,
रसोई से आती खुशबू आज फिर से मुँह में पानी ले आयी है।
बसा लिया है अपना एक नया संसार मैंने,
बन गई हूँ मैं खुद का अवतार,
फिर भी न जाने क्यों आज मन उछल रहा है,
बन जाऊँ मैं फिर से नादान।
सोचती हूँ, है वो मीलों दूर बुनती कढ़ाई अपने कमरे में,
नाक से फिसलती ऐनक की परवाह किए बिना,
पर जब सुनेगी की रो रही है उसकी बेटी,
फट से कहेगी उठकर, "बस कर रोना अब तो तू हो गई है बड़ी"
फिर प्यार से ले लेगी अपनी बाहों में मुझको,
एक एहसास दिला देगी खुदाई का इस दुनिया में,
जाड़े की धूप की तरह आगोश में ले लिया उसने,
इस ख्याल से ही रूक गए मेरे आँसू
और खिल उठी मुस्कान मेरे होठों पर।

कुछ समझने का काल है यह

दिलीप कुमार अरोड़ा
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी

यह कोरोना काल नहीं ।
कुछ समझने का काल है यह ।।

बड़े–बड़े हथियार बनाकर,
सुपीरियर समझने लगे थे हम ।
एक आम प्राणी बना दिया,
प्रभु के सूक्ष्म हथियार ने ।।

टुकड़ों मे बँट गया था समाज,
जातिवाद के नाम पर ।
रिश्तो की औकात बता दी,
इस कोरोना काल ने ।।

चले थे हम कैद करने,
गगन में उड़ते पंछियों को ।
हमें ही कैदी बना दिया,
इस कोरोना काल ने ।।

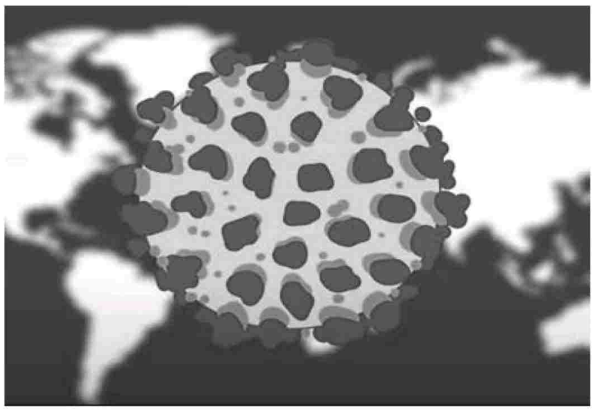

रीति–रिवाजों के भँवरजाल में ,
उलझ कर रह गये थे हम ।
उन सबसे ऊपर उठा दिया,
इस कोरोना काल ने ।।

आओ सोचे,
क्या खोया क्या सीखा हमने,
इस कोरोना काल में। ।
जो सीखा वो कभी न भूलें।,
इस कोरोना काल से ।।

साहब यही हकीकत है यह देख के दुनिया हँसती है

पवन कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सभी पूछते हाल हमारा, सब ठीक बोल रह जाता हूँ।
दर्द छुपा रखा हूँ दिल में कई, पर फिर भी मुस्कुराता हूँ।।
कौन किसी का दर्द समझता है आज के इस वक्त में।
आज परायापन दिखता है हमें अपनों के रक्त में।।
एक बात देखी है दुनिया गम में ताने कसती है।
साहब यही हकीकत है यह देख के दुनिया हँसती है।।

बना चुका हूँ दोस्त हजारों हमने भी इस जमाने में।
काम न कोई आता है पर जिंदगी के इस विराने में।।
मेरी आदत मेरी हरकत क्यों समझे नादानी है।
नहीं दिखता है सबको पर, मेरी आंखों में भी पानी है।।
अंदर अंदर, रोता हूँ तब मेरी आँखे धँसती है।
साहब यही हकीकत है देख के दुनिया हँसती है।।

जीत रहा हूँ या हार रहा हूँ इस दुनिया के होड़ में।
पता नहीं मैं कहाँ खड़ा हूँ जिंदगी के कठिन मोड़ पे।।
आधी उम्र खत्म हो गई इस जिंदगी को जीने में।
मृत्यु की करें हम चिंता क्योंकि जान यहाँ पर सस्ती है।
साहब यही हकीकत है यह देख के दुनिया हँसती है।।

लोग देखते हैं की मेरा गम नहीं है सीने में।
गम पर पर्दा डाल रखा है बस मजा आ रहा है जीने में।।
धन दौलत और मोटर गाड़ी मेरे भी बचपन के सपने थे।
आज खड़ा हूँ मैं अकेला, न जाने कौन यहाँ पर अपने हैं।।
भरी हुई है भीड़ भवन में पर सुनसान हमारी बस्ती है।
साहब यही हकीकत है यह देख के दुनिया हँसती है।।

श्रद्धांजलि

बीता हुआ वर्ष कोरोना महामारी के कारण काफी कष्टदायक और दुखदायी रहा है। देश के जाने–माने हस्तियों का निधन हो गया। कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार पटना में भी अनेक सहकर्मी हमसे बिछुड़ गए, उन सभी को प्रहरी परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मृत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा उनके परिवार को इस असहनीय दुःख का सामना करने में हौसला दें। हमसे बिछड़े हुए सहकर्मियों के नाम इस प्रकार हैं।

नाम	पदनाम	मृत्यु की तिथि
स्वर्गीय संदीप कुमार सिन्हा	वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी	15/08/2020
स्वर्गीय विनय कुमार	एमटीएस	16/04/2021
स्वर्गीय संजय कुमार सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	20/04/2021
स्वर्गीय इज्जतबा हुसैन	सहायक पर्यवेक्षक	29/04/2021
स्वर्गीय अरविंद कुमार	वरीय लेखापरीक्षक	23/04/2021
स्वर्गीय विजय शंकर	वरीय लेखापरीक्षक	28/04/2021
स्वर्गीय राजेश कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	05/05/2021

हिन्दी पखवाड़ा 2021 के उद्घाटन अवसर पर दीप प्रज्जवलित करते हुए श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), वरीय उप महालेखाकार एवं उप महालेखाकार गण

हिन्दी पखवाड़ा 2021 के उद्घाटन अवसर पर उद्गार व्यक्त करते हुए श्री प्रवीण कुमार सिंह, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

हिन्दी पखवाड़ा 2021 के उद्घाटन अवसर पर सरस्वती वंदना करते हुए भारत कुमार पांडेय, लेखापरीक्षक

हिन्दी पखवाड़ा 2021 में निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी